संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-23 अंक- 50
पृष्ठ 8
गुरूवार
05 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सीढ़ियां चढ़ते समय आपके भी...

विचार- हांफते-खांसते भाजपा का समर्थन

खेल- किंग कोहली के कमाल से न्यूजीलैंड...

मुख्यमंत्री ने कांग्रेस और इंडी गठबंधन पर किया कड़ा प्रहार, बोले-

इंडी गठबंधन के नेतृत्वकर्ताओं में क्लैरिटी, कैपेसिटी और क्रेडिबिलिटी का अभाव



लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कांग्रेस व इंडी गठबंधन पर करारा प्रहार किया। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट श्एक्सश पर लिखा कि इनके नेतृत्वकर्ताओं में क्लैरिटी, कैपेसिटी और क्रेडिबिलिटी का पूरा अभाव है। जनादेश का अनादर इसी सोच का परिणाम है।

हार के नए रिकॉर्ड बना रही कांग्रेस व इंडी गठबंधन

मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि चुनावों में हार के नए रिकॉर्ड बना रही कांग्रेस और इंडी गठबंधन की हताशा अब अराजकता की राजनीति में बदल गई है। इनके नेतृत्वकर्ताओं में क्लैरिटी, कैपेसिटी और क्रेडिबिलिटी का पूरा अभाव है। जनादेश का अनादर इसी सोच का परिणाम है।

गोरखपुर में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ आज पदयात्रा करेंगे मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने बताया कि इस अराजकता के विरुद्ध जनजागरण और लोकतंत्र की गरिमा की रक्षा का संकल्प लेकर बुधवार को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन जी के साथ गोरखपुर में आयोजित श्लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओश पदयात्रा में सहभागिता करूंगा। मुख्यमंत्री ने एक तरफ कांग्रेस व इंडी गठबंधन की अराजकता पर सवालिया निशान उठाया तो दूसरी तरफ देशवासियों को आश्वस्त किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में हम भारत के महान लोकतंत्र की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

श्रीनगर में दर्दनाक हादसा, बेमिना में भीषण आग से 80 अस्थायी शेल्टर जलकर खाक, दिल्ली के की जलकर मौत

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में आग लगने की वजह से कम से कम दो कबाड़ इकट्ठा करने वालों की मौत हो गई और करीब 80 अस्थायी शेल्टर जलकर खाक हो गए। अधिकारियों ने बताया कि श्रीनगर के बेमिना के दुर्बल में सुबह-सुबह अस्थायी शेल्टर में लगी भीषण आग में दो कबाड़ इकट्ठा करने वालों की मौत हो गई। उन्होंने कहा, आग रात करीब 12.23 बजे लगी, जिसने तिरपाल और लकड़ी से बने करीब 80 अस्थायी शेल्टरों को अपनी चपेट में ले लिया। आग में एक खाली पोल्ट्री फार्म और एक टिपर को भी नुकसान हुआ है। अधिकारियों ने बताया, फायर स्टेशन जेवीसी और रावलपोरा से फायर टेंडर, साथ ही फायर एंड इमरजेंसी सर्विसेज हेडक्वार्टर बटमालू से अतिरिक्त मदद के लिए बुलाए गए, ताकि आग पर काबू पाया जा सके।

पांच मिनट में साबित कर दूंगा कि देशद्रोही हैं मोदी : राहुल



संगरूर (पंजाब)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नियंत्रण होने का आरोप लगाते हुए कहा है कि श्री मोदी देशद्रोही हैं और वह आमने-सामने की बहस में पांच मिनट के भीतर इसे साबित भी कर देंगे। श्री गांधी ने यहां बुधवार को श्इंसाफ रैलीश को संबोधित करते हुए कहा कि उन्होंने एक दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी को आमने-सामने बहस करने की चुनौती दी थी। उन्होंने कहा कि बहस में निर्णायक के तौर पर प्रधानमंत्री जिसे चाहें, उसे बैठा सकते हैं। वह मोहन भागवत या अडानी को भी निर्णायक बनाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री संसद में चर्चा की बात करते हैं लेकिन वहां विपक्ष का माइक बंद कर दिया जाता है और उसे बोलने नहीं दिया जाता। उन्होंने दावा किया कि प्रधानमंत्री उनके सामने बैठकर बहस करने की हिम्मत नहीं कर सकते। उन्होंने आरोप लगाया कि डोनाल्ड ट्रंप प्रधानमंत्री मोदी को नियंत्रित करते हैं और यही वजह है कि ट्रंप ने धमकाकर उनसे पांच मिनट के भीतर अमेरिका के साथ व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करवा लिये। इस समझौते के लिए न तो मंत्रिमंडल की बैठक बुलायी गयी और न ही नौकरशाहों से सलाह ली गयी। उन्होंने आरोप लगाया कि इस समझौते से देश के किसानों के हितों को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि श्री मोदी ने अमेरिका के सामने कुछ नहीं बोला। ट्रंप लगातार दावा करते हैं कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध रुकवाया, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी इस पर कुछ नहीं बोल पाते। उन्होंने सवाल किया कि प्रधानमंत्री श्री ट्रंप के इस दावे का जवाब क्यों नहीं देते। श्री गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री किसानों, छोटे और मझोले उद्योगों तथा आम कारोबारियों के हितों की रक्षा करने के बजाय बड़े उद्योगपतियों के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार ने किसानों के खिलाफ काम किया और देश का पूरा बुनियादी ढांचा अडानी जैसे उद्योगपतियों के हवाले किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पंजाब में एक समय कांग्रेस की सरकार के दौरान ऑटोमोबाइल उद्योग के साथ बड़ी संख्या में लघु एवं मध्यम उद्योग थे, जिनसे रोजगार के अवसर पैदा होते थे। किसानों और छोटे-मझोले उद्योगों की रक्षा के बिना पंजाब का विकास संभव नहीं है। उन्होंने अमेरिका में अडानी के खिलाफ चल रहे मामले का उल्लेख करते हुए आरोप लगाया कि व्यापार समझौते के बाद अमेरिका ने अडानी की कंपनी के खिलाफ मामला बंद कर दिया। कांग्रेस नेता ने गृह मंत्री अमित शाह पर भी निशाना साधा और कहा कि उन्होंने पंजाब से तीन साल में नशा खत्म करने का वादा किया है, लेकिन उनका यह दावा पूरा नहीं होगा। उन्होंने आकलन जताया कि मौजूदा सरकार एक साल भी नहीं चलेगी और तीन साल बाद अमित शाह गृह मंत्री भी नहीं रहेंगे।

अग्निवीरों को दो साल का सेवा विस्तार, 25 प्रतिशत की नौकरी होगी पक्की

नयी दिल्ली, एजेंसी। अग्निवीर योजना के तहत सेना में भर्ती युवाओं के लिए दो साल के अतिरिक्त सेवा विस्तार की घोषणा से बड़ा बदलाव होने की बात सामने आई है। प्रस्तावित व्यवस्था के अनुसार, चार साल का कार्यकाल पूरा करने वाले 25 प्रतिशत अग्निवीरों को नियमित सैनिक बनने का मौका मिलेगा, जबकि बाकी 75 प्रतिशत जवानों को दो साल और सेना में सेवा करने का अवसर दिया जाएगा। इस फैसले को केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी मिलने की जानकारी दी गई है। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल एनएस राजा सुब्रमण्यम ने भी इस बदलाव से जुड़ी जानकारी साझा की है। इस फैसले से उन हजारों युवाओं को राहत मिलने की उम्मीद है, जिनका चार साल का कार्यकाल जल्द पूरा होने वाला था। आइए जानते हैं कि नई व्यवस्था में अग्निवीरों के लिए क्या बदलाव किए गए हैं। अग्निपथ योजना के मौजूदा प्रावधान के तहत चार साल की सेवा पूरी होने के बाद अधिकतम 25 प्रतिशत अग्निवीरों को नियमित कैडर में शामिल किया जा सकता है। बाकी 75 प्रतिशत जवानों को सेवा से मुक्त किया जाना था। नई व्यवस्था के विवरण के मुताबिक, अब नियमित सेवा के लिए चयनित नहीं होने वाले अग्निवीरों को दो साल का अतिरिक्त कार्यकाल मिलेगा। उदाहरण के तौर पर, यदि 100 युवा अग्निवीर के रूप में भर्ती होते हैं तो चार साल बाद 25 को नियमित सैनिक बनाया जाएगा और शेष 75 को दो साल और सेवा करने का मौका मिलेगा।

एसआईआर में फॉर्म-6 पर विवाद पहुंचा सुप्रीम कोर्ट

नयी दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान पुराने मतदाताओं से फॉर्म-6 भरवाने को लेकर विवाद बढ़ गया है। मामला अब सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने बुधवार को मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के समक्ष इस मुद्दे पर तत्काल सुनवाई की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग उन लोगों से भी फॉर्म-6 भरने को कह रहा है, जिनके नाम पहले मतदाता सूची में शामिल थे, लेकिन एसआईआर प्रक्रिया के दौरान हटा दिए गए। फॉर्म-6 का इस्तेमाल सामान्य तौर पर पहली बार मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने या नए मतदाता के पंजीकरण के लिए किया जाता है।

दिमागी नक्सल वाला फ्लॉप बयान दोहरा रहे पीएम मोदी, वोट चोरी पर उनके पास कोई जवाब नहीं : खरगे

नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बुधवार को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिमागी नक्सल वाले बयान की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि वोट चोरी और विदेशी ताकतों के सामने भारतीय हितों को गिरवी रखने से जुड़े सवालों पर सरकार के पास कोई जवाब नहीं है। खरगे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा, प्रधानमंत्री मोदी अपने फ्लॉप हो चुके दिमागी नक्सल वाले बयान को बार-बार दोहरा रहे हैं। उनके पास वोट चोरी और राहुल गांधी की उस खुली चुनौती का कोई जवाब नहीं है, जिसमें पूछा गया है कि उन्होंने भारतीय हितों को विदेशी ताकतों के सामने कैसे गिरवी रखा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के उस बयान पर भी खरगे ने सवाल उठाए, जिसमें उन्होंने तीन करोड़ मतदाताओं को घुसपैठिया बताया था। खरगे ने पूछा कि इतने वर्षों तक गृह मंत्री रहने के दौरान शाह क्या कर रहे थे और अवैध लोगों को भारत में प्रवेश करने से क्यों नहीं रोक पाए। उन्होंने कहा, शाह हमें बता रहे हैं कि तीन करोड़ मतदाता घुसपैठिए हैं। वह इतने वर्षों तक गृह मंत्री रहते हुए क्या कर रहे थे? उन्होंने अवैध लोगों को भारत में प्रवेश करने दिया? उन्हें अपनी अक्षमता के लिए बर्खास्त कर देना चाहिए। खरगे ने चुनाव आयोग पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर चुनाव आयोग ने बार-बार अपना रुख बदला है। उन्होंने कहा, एसआईआर पर चुनाव आयोग ने पांच बार यू-टर्न लिया है। इसमें फॉर्म-6 में पूरी तरह बदलाव भी शामिल है, जिसे साथी चुनाव आयुक्तों ने ही अवैध बताया था। ऐसा क्यों? संसद की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए खरगे ने कहा कि संसद के पिछले सत्र को 83 दिनों से अधिक समय बीतने के बावजूद अभी तक सत्रावसान नहीं किया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष की हालिया गतिविधियों के बाद सरकार विशेष सत्र बुलाने की तैयारी कर रही है। खरगे ने कहा, संसद के पिछले सत्र का 83 दिनों से अधिक समय बीतने के बाद भी सत्रावसान नहीं हुआ है। अब जब अगला सत्र करीब है, तो वे विशेष सत्र बुलाना चाहते हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ सार्वजनिक महाभियोग की पहल और रामलीला मैदान में हुई विशाल वोट बचाओ रैली ने मोदी जी और शाह को परेशान कर दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री को खुली बहस की चुनौती देते हुए कहा कि उन्हें सवालों का सामना करना चाहिए और संसद में आकर जवाब देना चाहिए। उन्होंने कहा, आप संसद में नहीं आते। आपने एक भी खुली प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं की है। अब बहस का समय है। आगे आइए और सवालों का सामना कीजिए। देश को बताइए कि आपने वोट चोरी क्यों की। खरगे की यह टिप्पणी राहुल गांधी की ओर से प्रधानमंत्री मोदी को विदेशी प्रभाव और देश की वित्तीय व्यवस्था से जुड़े मुद्दों सहित विभिन्न विषयों पर खुली बहस की चुनौती दिए जाने के एक दिन बाद आई है। मंगलवार को राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री से कहा था कि वह चर्चा के लिए कोई भी जगह चुन सकते हैं। उन्होंने विपक्ष को राष्ट्रविरोधी बताने वाले सरकार के आरोपों पर भी सवाल उठाए थे।



एससी का बड़ा फैसला: दो से अधिक बच्चे होने पर चुनाव लड़ने से रोकने वाले कानून अब प्रासंगिक नहीं

नयी दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा कि दो से अधिक बच्चे होने पर दंड देने वाले कानूनों की प्रासंगिकता खत्म हो गई है। कोर्ट ने टिप्पणी की कि भारत में प्रजनन दर लगातार घट रही है। ऐसे में इन कानूनों का अब कोई औचित्य नहीं रह गया है। इनकी फिर से समीक्षा की जरूरत है। जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की पीठ ने महाराष्ट्र के काकोडा ग्राम पंचायत की पूर्व सरपंच मंगला भीमराव की अयोग्यता को रद्द करते हुए यह टिप्पणी की, जिन्हें तीसरा बच्चा होने के कारण चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित किया गया था। अपनी टिप्पणी में कोर्ट ने कहा, "पिछले दो दशकों में भारत की जनसांख्यिकीय स्थिति में बड़ा बदलाव आया है। पिछले कुछ दशकों में आए जनसांख्यिकीय बदलावों के कारण जनसंख्या विस्फोट का डर अब नहीं रहा। इसका प्रमाण यह है कि प्रजनन दर 3 से घटकर 1.9 पर आ गई है। इसलिए, दो से अधिक बच्चे होने पर चुनाव लड़ने से अयोग्य ठहराने वाले कानून, मौजूदा हालात में शायद अब प्रासंगिक नहीं रह गए हैं। इसलिए, अदालत ने महाराष्ट्र के एक कानून के तहत पूर्व सरपंच मंगला भीमराव के खिलाफ चल रही कार्यवाही पर रोक लगा दी। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने 2003 के जावेद बनाम हरियाणा सरकार मामले में दिए गए फैसले को आगे समीक्षा के बड़ी बेंच के पास भेज दिया। उस फैसले में तीन जजों की पीठ ने हरियाणा पंचायती राज अधिनियम, 1994 के उस प्रावधान को सही ठहराया था, जिसके तहत दो से अधिक जीवित बच्चे होने पर व्यक्ति पंचायत चुनाव नहीं लड़ सकता था। कोर्ट ने बताया कि जब जावेद मामले में फैसला आया था, तब भारत की कुल प्रजनन दर लगभग तीन बच्चे प्रति महिला थी, जिससे जनसंख्या नियंत्रण एक अहम नीतिगत मुद्दा बन गया था।



PRESS
हमेशा आपके साथ

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

सोरांव महोत्सव का समापन, हास्य कवि ने बांधा समा

प्रयागराज। सोरांव महोत्सव का मंगलवार को तीसरे दिन समापन हुआ। इस अवसर पर स्थानीय लोक और हास्य कलाकारों ने लोगों का मनोरंजन किया। गायिका साक्षी पाल ने भक्ति गीत और भजन प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। प्रसिद्ध हास्य कवि बिहारी लाल अंबर ने मनमोहक हास्य कविताएं सुनाईं। उनकी कविताओं से लोग हंसते–हंसते लोटपोट हो गए। कार्यक्रम में सोरांव विकासखंड के 45 दिव्यांगों को हस्त चलित ट्राई साइकिलें बांटी गईं। ट्राई साइकिल मिलने पर दिव्यांगों के चेहरे पर खुशी छा गई। एमएलसी सुरेंद्र चौधरी ने सभी स्थानीय लोगों, अधिकारियों, कर्मचारियों, कलाकारों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

जिसका हुआ था अंतिम संस्कार, वह प्रीती परिजनों से मिलेगी

प्रयागराज। गुजरात के वडोदरा से सकुशल प्रयागराज लाई गई प्रीती का इंतजार कर रहे परिजनों को अभी थोड़ा और सब्र करना पड़ेगा। मेडिकल परीक्षण में हुई देरी के कारण मंगलवार को पुलिस उसे परिजनों को नहीं सौंप सकी। रात में उसे नारी संरक्षण केंद्र में रखा गया है, अब बुधवार को उसके परिवार के हवाले किया जाएगा। नवाबगंज के उमरावगंज निवासी कमला देवी की बेटी प्रीती, जिसे मृत मानकर परिजनों ने 30 सितंबर को किसी अज्ञात शव का अंतिम संस्कार कर दिया था, वह सोमवार देर रात पुलिस टीम के साथ प्रयागराज पहुंच गई। नवाबगंज पुलिस उसे वडोदरा के नारी संरक्षण केंद्र से लेकर वापस लौटी है। नवाबगंज इंस्पेक्टर पंकज अवस्थी ने बताया कि प्रीती को प्रयागराज लाने के बाद नियमानुसार सबसे पहले उसका मेडिकल परीक्षण कराया जाना था। अस्पताल में मेडिकल परीक्षण की प्रक्रिया में काफी देरी हो गई। समय अधिक हो जाने के कारण मंगलवार को उसे परिजनों को नहीं सौंपा जा सका। सुरक्षा और विधिक नियमों को ध्यान में रखते हुए पुलिस ने प्रीती को फिलहाल प्रयागराज के ही नारी संरक्षण केंद्र में रखा है। वीडियो कॉल पर बेटी को जिंदा देखने के बाद से ही परिवार उसकी राह ताक रहा है।

ट्रक की चपेट में आने से जर्मन शेफर्ड की मौत

प्रयागराज। सेमरी शेखपुर गांव में सोमवार शाम तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से सात वर्षीय पालतू जर्मन शेफर्ड कुत्ते की मौत हो गई। घटना से नाराज ग्रामीणों ने पीछा कर ट्रक पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सेमरी शेखपुर निवासी जितेंद्र कुमार पटेल का कहना था कि उनका कुत्ता घर की बाउंड्री के पास बैठा था। इसी दौरान गुजर रहे ट्रक ने उसे कुचल दिया। हादसे में कुत्ते की मौके पर ही मौत हो गई। आरोप है कि चालक ट्रक लेकर भागने लगा लेकिन ग्रामीणों ने पीछा कर उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया था। पहुंची पुलिस ने चालक को हिरासत में लेकर ट्रक थाने में खड़ा करा दिया। पीड़ित ने चालक को नामजद करते हुए ट्रक मालिक के खिलाफ तहरीर दी थी। मंगलवार को दिनभर चली पंचायत के बाद दोनों पक्षों में समझौता हो गया। शाम को सुलहनामा पुलिस को सौंप दिया गया। प्रभारी निरीक्षक जगदीश कुशवाहा ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच सुलह हो गई है।

शंकरगढ़ में जाम से मिलेगी निजात, पुलिस ने चलाया अभियान

प्रयागराज। कस्बे के सदर बाजार में जाम की समस्या से निपटने के लिए थानाध्यक्ष प्रीतम कुमार तिवारी ने पुलिस टीम के साथ अभियान चलाया। इस दौरान सड़क और पटरी पर अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों को सख्त हिदायत दी गई। पुलिस ने दुकानदारों को सड़क या पटरी पर सामान न फैलाने और दुकान न लगाने के निर्देश दिए। ऐसा करने से राहगीरों और वाहन चालकों को आवागमन में परेशानी होती है। इससे बाजार में जाम की स्थिति उत्पन्न होती है। पुलिस ने दुकानदारों से यातायात व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग की अपील की। निर्देशों का पालन न करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई। इस अभियान से बाजार में अतिक्रमण और जाम की समस्या से राहत मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

मीटर रीडरों ने मांगों को लेकर बुलंद की आवाज

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड के मीटर रीडरों ने मांगों को लेकर धरना दिया है। पिछले 10 से 15 वर्षों से सेवाएं दे रहे इन रीडरों के सामने रोजगार का संकट है। मीटर



लगने के बाद परिवार का भरण–पोषण मुश्किल हो गया है। उन्हें प्रति बिल मात्र 3.50 रुपये का भुगतान मिलता है। रीडरों ने अधीक्षण अभियंता को ज्ञापन सौंपा। उनकी सात सूत्री मांगों में उत्तर प्रदेश आउटसोर्स सेवा निगम में समायोजन प्रमुख है। उन्होंने कुशल श्रेणी के अनुसार मानदेय, वर्दी, ईपीएफ और ईएसआई सुविधा की मांग की। साथ ही, दूरभाष, पुनर्भरण, मुद्रक, बैटरी, आंकड़ा तार और ओटीजी जैसे उपकरण भी मांगे। धरने में ज्ञानेंद्र कुमार, इंद्र बहादुर, अमित कुमार, गिरधारी लाल, ओम प्रकाश पटेल, अवधेश मिश्र, भागवत श्रीवास्तव, पवन कुमार आदि रहे।

कतवारूपुर ने जीता मां ऐंद्री धाम कबड्डी टूर्नामेंट

प्रयागराज। बहादुरपुर विकास खंड के कोटवा गांव में आयोजित मां ऐंद्री धाम कबड्डी टूर्नामेंट 2026 कतवारूपुर की टीम ने जीत लिया है। फाइनल मुकाबले में मदन मोहन स्टेडियम प्रयागराज को नौ अंकों से हराया। रोमांचक फाइनल मुकाबले में कतवारूपुर की टीम ने 49 अंक बना कर अपने प्रतिद्वंद्वी मदन मोहन मालवीय स्टेडियम टीम को 39 अंकों पर रोक लिया। इसके पहले एक दिवसीय कबड्डी टूर्नामेंट में तकरीबन 12 से अधिक टीमों ने प्रतिभाग किया। विजेता एवं उप विजेता टीम को मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी राजन यादव ने नकद धनराशि एवं मेडल प्रदान किया। इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य सुरेश नेता, आयोजकरू रोहित कुमार यादव (पहलवान), कमल सिंह यादव (बबलू डेरी वाले), मुकेश कुमार यादव (पूर्व बीडीसी), रोहित यादव (डेरी वाले) आदि मौजूद रहे।

मेरा दिमाग मुझे डराता है, जिंदगी तबाह कर रहा

8 पेज के नोट में लिखीं ये बातें, नीट में हुआ चयन, दी जान

प्रयागराज। प्रयागराज में 18 वर्षीय नीट छात्रा ऋतु शर्मा ने पिता की लाइसेंसी पिस्टल से गोली मारकर जान दे दी। परिजनों के मुताबिक, नीट काउंसलिंग में दूसरे राउंड तक चयन न होने से वह निराश थी। उधर, सोमवार दोपहर जारी नीट काउंसलिंग के तीसरे राउंड की सूची में छात्रा को सोनभद्र के सरकारी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की सीट आवंटित हुई थी। छात्रा ने आठ पेज का सुसाइड नोट भी लिखा है।

दिनभर मेरे दिमाग में परेशान करने वाले ख्याल आते हैं। मैं ढंग से पढ़ाई नहीं कर पा रही हूं। एक ही चीज को बार–बार दोहराती हूं। ऐसा नहीं करने पर मेरा दिमाग डराता है कि कुछ बुरा हो जाएगा। अब मैं थक चुकी हूं। ये अनचाहे विचार मेरी जिंदगी पूरी तरह तबाह कर रहे हैं।

ये बातें त्रिवेणीपुरम में सोमवार को आत्महत्या करने वाली 18वर्षीय नीट छात्रा रितु शर्मा के आठ पेज के सुसाइड नोट में लिखी मिली हैं। मेडिकल में चयन होने के बावजूद वह लंबे समय से मानसिक परेशानी से जूझ रही थी।

सुसाइड नोट में ऋतु ने लिखा है कि वह पिछले दो वर्षों से ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसऑर्डर (ओसीडी) जैसी समस्या से परेशान थी। इसकी शुरुआत 11वीं और 12वीं की पढ़ाई के दौरान हुई थी।

शुरुआत में उसे समझ नहीं आता था कि उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा है। वह इसे सामान्य ओवरथिंकिंग और एंग्जायटी समझती थी। कुछ सप्ताह पहले इंटरनेट पर इसके बारे में पढ़ने के बाद उसे अपने अनुभव ओसीडी के लक्षणों से मिलते–जुलते लगे।

उसने लिखा कि पढ़ाई के दौरान उसके दिमाग में बार–बार अनचाहे विचार और शंकाएं आती थीं। किसी विषय को अच्छी तरह पढ़ लेने के बाद भी मन उसे दोबारा पढ़ने और समझने के लिए मजबूर करता था। ऐसा नहीं करने पर परीक्षा में गलती होने या असफल होने का डर सताता था। वह बार–बार चीजें दोहराती और चेक करती थी।

ऋतु के आठ पेज के सुसाइड नोट में उसने खुद को असहाय, कमजोर और आत्मविश्वास की कमी से घिरा हुआ महसूस करने की बात भी लिखी। उसे लगता था कि वह दूसरों से पीछे रह गई है और जीवन के लक्ष्य हासिल नहीं कर पाएगी। उसने सवाल किया कि आखिर उसके साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है। वह सामान्य जिंदगी जीना, शांत दिमाग से पढ़ाई करना और अपने कॅरिअर के लक्ष्य हासिल करना चाहती थी।

ऋतु के परिजनों को सोमवार शाम करीब साढ़े चार बजे नीट की तीसरे राउंड की काउंसिलिंग का परिणाम मिला था। इसमें उसे सोनभद्र के सरकारी मेडिकल कॉलेज में ईडब्ल्यूएस–दिव्यांग (ईडब्ल्यूपीएच) कोटे के तहत एमबीबीएस की सीट आवंटित हुई थी। उसकी आंखों में परेशानी थी, जिसके चलते उसका दिव्यांगता प्रमाणपत्र बना था। इसके बावजूद वह मानसिक परेशानी से जूझ रही थी।



ऋतु ने वर्ष 2022 में प्रयागराज के दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) से हाईस्कूल और 2024 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की थी। इसके बाद उसने नीट की तैयारी शुरू की। वर्ष 2026 की परीक्षा में उसकी ऑल इंडिया रैंक 10,74,272 आई थी।

ऋतु के पिता देवराज शर्मा ने बताया कि वह रातभर अपने कमरे पढ़ाई करती थी और अगले दिन नींद पूरी कर दोपहर दो से ढाई बजे के बीच कमरे से बाहर आती थी। सोमवार को जब वह काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं निकली तो परिवार के लोगों ने खिड़की से अंदर झांककर देखा। कमरे में ऋतु का शव खून से लथपथ पड़ा हुआ था। सूचना पर पुलिस पहुंची और जांच शुरू की। कमरे से आठ पेज का सुसाइड नोट भी मिला।

ऋतु के पिता डॉ. देवराज शर्मा राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण से सेवानिवृत्त इंजीनियर हैं। उनके पास लाइसेंसी पिस्टल और राइफल है। ऋतु का जुड़वा भाई ऋषिराज देहरादून के एक कॉलेज से बीटेक की पढ़ाई कर रहा है। बहन के मौत की जानकारी उसे मिली तो वह बदहवास हो गया। मंगलवार की सुबह वह घर पहुंचा। पिता देवराज और बेटा ऋषिराज एक–दूसरे से गले लिपकर ऋतु को यादकर बिलखने लगे। पिता और भाई बार–बार यही कहे जा रहे थे कि आखिर ऋतु तुमने ऐसा क्यों किया। कोई तकलीफ थी तो बताया क्यों नहीं।

पिता देवराज ने बताया कि रविवार की रात बेटी ने हम दोनों के साथ बैठकर खाना खाया। इसके बाद वह गुड नाइट बोलकर अपने कमरे में चली गई। तब तक ऐसा महसूस ही नहीं हुआ कि बेटी अगले कुछ घंटों में इतना बड़ा आत्मघाती कदम उठा लेगी।

डॉक्टरों के पैनल और वीडियोग्राफी के बीच ऋतु के शव का पोस्टमार्टम मंगलवार की दोपहर में हुआ। पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया। बाद में पिता देवराज, भाई ऋषिराज, चाचा और अन्य परिजनों ने ऋतु के शव का अंतिम संस्कार दारागंज घाट पर किया। उसके शव को पोस्टमार्टम हाउस से सीधे दारागंज घाट ले जाया गया था। परिजनों के मुताबिक, नीट काउंसलिंग में दूसरे राउंड तक चयन न होने से वह निराश थी। उधर, सोमवार दोपहर जारी नीट काउंसलिंग के तीसरे राउंड की सूची में छात्रा को सोनभद्र के सरकारी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की सीट आवंटित हुई। आशंका जताई जा रही है कि छात्रा ने रविवार रात को ही खुदकुशी कर ली थी।

गाजीपुर के नोनहरा थाना क्षेत्र के अनुईपुर गांव निवासी रिटायर्ड इंजीनियर देवराज शर्मा ने करीब छह साल पहले त्रिवेणीपुरम के गंगा सेक्टर में मकान बनवाया था। भूतल पर शॉपिंग मॉल है। पहली मंजिल के दो फ्लैट को जोड़कर परिवार रहता है। उसके ऊपर की मंजिल में किरायेदार और भाई रहते हैं। सोमवार शाम करीब साढ़े पांच बजे देवराज शर्मा और उनकी पत्नी अमौती शर्मा घर में मौजूद थे। बेटी ऋतु अपने कमरे में थी। वह अक्सर देर रात तक पढ़ाई करती थी। दोपहर बाद ही कमरे से बाहर आती थी।

सोमवार को वह काफी देर तक बाहर नहीं निकली तो परिजनों को संदेह हुआ। इस पर देवराज ने घटना की जानकारी अपने अधिवक्ता भाई को दी। छात्रा के कमरे में लगी स्लाइडिंग वाली खिड़की खोली गई खून से लथपथ ऋतु का शव दिखा। मौके पर एसीपी झूंसी अरुण पाराशर और इंस्पेक्टर नरेश कुमार कश्यप भारी पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया। फिर किसी तरीके से छात्रा के कमरे का दरवाजा खोला गया।

देवराज की लाइसेंसी पिस्टल भी बरामद की गई। छात्रा ने सिर की बाईं कनपटी पर गोली मारी थी। गोली बाईं कनपटी से होते हुए दाहिने तरफ से निकल गई थी। आशंका है कि छात्रा ने रात को ही गोली मारकर खुदकुशी कर ली थी। मौत का सही समय और घटना के पीछे की वजह जांच के बाद ही स्पष्ट होगी।

सोनभद्र मेडिकल कॉलेज में मिला था दाखिला

ऋतु ने प्रयागराज के दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) से इंटरमीडिएट की पढ़ाई की थी। इसके बाद वह नीट की तैयारी कर रही थी। इस बार उसकी ऑल इंडिया रैंक 10,74,272 आई थी। सोमवार को जारी यूपी नीट की तीसरे राउंड की काउंसलिंग में उसे ईडब्ल्यूएस–दिव्यांग कोटे के तहत सोनभद्र के सरकारी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की सीट आवंटित हुई थी।

एसीपी अरुण पाराशर ने बताया कि परिजनों से पूछताछ में पता चला कि दो राउंड की काउंसलिंग में उसका चयन नहीं हो पाया था जिससे वह तनाव में थी। सोमवार को उसके इस आत्मघाती कदम से कुछ घंटे बाद आए परिणाम में उसका दाखिला सरकारी मेडिकल कॉलेज सोनभद्र में हो गया था।

ऋतु के पिता इंजीनियर देवराज शर्मा के पास .32 बोर की पिस्टल और .315 बोर की राइफल है। दोनों असलहों का ऑल इंडिया लाइसेंस गृह मंत्रालय और अरुणाचल प्रदेश के ईस्ट सियांग जिला प्रशासन से जारी हुआ था। पुलिस ने घटनास्थल से पिस्टल बरामद की है।

चेहरे से बनेगा जीवन प्रमाण पत्र, घर बैठे जमा कर सकेंगे पेंशनभोगी, इस साल दो करोड़ का लक्ष्य

प्रयागराज। अब पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाण पत्र जमा करने के लिए बार–बार बैंक या कोषागार जाने की जरूरत नहीं होगी। मोबाइल फोन से चेहरे की पहचान कराकर घर बैठे ही यह काम किया जा सकेगा। केंद्र सरकार ने इसके लिए नवंबर में देशव्यापी अभियान शुरू किया है। इस बार दो करोड़ से अधिक प्रमाण पत्र बनाने और एक लाख से ज्यादा शिविर लगाने का लक्ष्य है।

पेंशन पाने वालों को हर साल जीवन प्रमाण पत्र जमा करने के लिए परेशान न होना पड़े, इसके लिए केंद्र सरकार ने नवंबर में विशेष अभियान शुरू किया है। एक से 30 नवंबर तक चलने वाले इस पांचवें देशव्यापी अभियान में पेंशनभोगियों के डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र बनाए जा रहे हैं। इस साल दो करोड़ से अधिक प्रमाण पत्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है। खास बात यह है कि अब पेंशनभोगी अपने मोबाइल फोन से चेहरे की पहचान कराकर घर बैठे ही जीवन प्रमाण पत्र जमा कर सकेंगे।

पिछले साल इस अभियान के दौरान 1.92 करोड़ डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र जमा किए गए थे। इनमें 1.16 करोड़ प्रमाण पत्र चेहरे की पहचान के जरिए बनाए गए थे। इस बार सरकार का जोर इसी सुविधा को अधिक से अधिक पेंशनभोगियों तक पहुंचाने पर है।

बुधवार को प्रयागराज के कोषागार में लगे शिविर में पहुंचे भारत सरकार के संयुक्त सचिव (पेंशन) ध्रुवज्योति सेनगुप्ता ने बताया कि यह अभियान केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार मिलकर चला रही हैं। इसमें सरकारी विभागों के अलावा बैंक, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक, आधार से जुड़ी संस्था और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र की जीवन प्रमाण टीम भी सहयोग कर रही है।

अभियान के लिए करीब 1400 अधिकारियों को जिम्मेदारी दी गई है। नवंबर में देशभर में करीब तीन हजार शिविर लगाए जा रहे हैं, ताकि दूर–दराज के इलाकों में रहने वाले पेंशनभोगियों को भी इसका लाभ मिल सके।

चेहरे से पहचान कर जमा होगा प्रमाण पत्र

संयुक्त सचिव ने बताया कि चेहरे की पहचान वाली सुविधा से पेंशनभोगी घर बैठे कभी भी अपना जीवन प्रमाण पत्र जमा कर सकते हैं। इसके लिए आधार से जुड़ी पहचान की सुविधा का इस्तेमाल किया जाता है।

उन्होंने बताया कि जीवन प्रमाण पत्र बनाने की सुविधा वर्ष 2014 में शुरू हुई थी। पहले अंगूठे के निशान या आंखों की पुतली से पहचान की जाती थी। उम्र बढ़ने के साथ कई बुजुर्गों को इन तरीकों से पहचान कराने में परेशानी होने लगी। इसे देखते हुए वर्ष 2019–20 में चेहरे की पहचान से प्रमाण पत्र बनाने की सुविधा शुरू की गई। अब इसी सुविधा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

एक लाख से अधिक शिविर लगाने की तैयारी

ध्रुवज्योति सेनगुप्ता ने बताया कि पिछले साल पूरे अभियान के दौरान करीब 75 हजार शिविर लगाए गए थे। इस बार इनकी संख्या एक लाख से अधिक करने की तैयारी है। इसके लिए देश के सभी राज्यों, जिलों और प्रमुख उपमंडलों तक शिविर लगाए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार भी अभियान में पूरा सहयोग कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य उन बुजुर्ग पेंशनभोगियों तक सुविधा पहुंचाना है, जिन्हें डिजिटल सेवाओं का इस्तेमाल करने में परेशानी होती है।

डिजिटल प्रमाण पत्र को बताया सुरक्षित

डिजिटल धोखाधड़ी की आशंका पर संयुक्त सचिव ने कहा कि जीवन प्रमाण पत्र आधार के माध्यम से सत्यापित होता है। चेहरे की पहचान करने वाला ऐप कई विशेषताओं के आधार पर व्यक्ति की पहचान करता है। उन्होंने डिजिटल तरीके को सुरक्षित बताते हुए कहा कि कागज पर प्रमाण पत्र जमा करने में उसके खोने या उसकी प्रति का गलत इस्तेमाल होने की आशंका रहती है।

उन्होंने बताया कि पेंशनभोगी अपना जीवन प्रमाण पत्र बनवाने के लिए नजदीकी शिविर, डाकघर या बैंक शाखा में जा सकते हैं। वहां मौजूद कर्मचारी और अधिकारी प्रमाण पत्र बनाने में मदद करेंगे। उन्होंने पेंशनभोगियों से समय पर जीवन प्रमाण पत्र जमा करने की अपील की, ताकि उनकी पेंशन बिना किसी रुकावट के मिलती रहे।

स्कूल वाहन से टकराई बाइक, युवक की गई जान

प्रयागराज। हंडिया थाना क्षेत्र के चौकी बरौत अंतर्गत ऊपरदहां गांव स्थित सर्विस रोड पर मंगलवार दोपहर करीब तीन बजे स्कूल वाहन और बाइक की जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में बाइक सवार 25 वर्षीय युवक गंभीर रूप से घायल हो गया।



सीएचसी ऊपरदहां से जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, ऊपरदहां सीएचसी से करीब डेढ़ सौ मीटर दूर सर्विस रोड पर स्कूल वाहन टाटा सूमो गोल्ड छात्रों को लेकर बरौत की ओर जा रहा था। इसी दौरान बरौत की तरफ से आ रहे बाइक सवार 25 वर्षीय महेश चौहान पुत्र श्यामलाल चौहान (ढिलढिल) निवासी बरौत की स्कूल वाहन से जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर लगते ही वह सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद मौके पर अफरा–तफरी मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को सीएचसी ऊपरदहां पहुंचाया। चिकित्सकों ने हालत नाजुक देख उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। परिजन उसे जिला अस्पताल लेकर जा रहे थे, तभी रास्ते में उसकी मौत हो गई। मृतक की मां सरिता देवी ने बताया कि महेश अपनी भाभी खुशी चौहान को दिखाने के लिए ऊपरदहां अस्पताल गया था। महेश चार भाइयों में दूसरे नंबर पर था। उसके भाई मनीष, हरिश्चंद्र और सुरेश हैं।

आधुनिकता के दौर में भी कायम कुम्हारों की कारीगरी

प्रयागराज। दिवाली नजदीक आने से क्षेत्र के कुम्हारों के चाक तेजी से घूमने लगे हैं। बिजली की झालरों के बढ़ते चलन के बावजूद मिट्टी के दीयों की मांग ने उनके पुश्तैनी कारोबार को नई उम्मीद दी है। मुस्लिम समाज में शादी–विवाह के आयोजनों में भी मिट्टी के बर्तनों की मांग से कारीगरों को रोजगार मिल रहा है। मऊआइमा के ग्राम सिंसई निवासी 65 वर्षीय भोला नाथ प्रजापति इसे पुश्तैनी व्यवसाय बताते हैं। वे इस कला को जीवित रखने का संकल्प लेते हैं। सरपताही, रमना और मऊदोस्तपुर समेत कई गांवों के कुम्हार महीनों पहले से तैयारी में जुटे हैं। इनमें रमेश चंद्र, हरी लाल और मनोहर प्रजापति जैसे कारीगर शामिल हैं। दिलीप, मुकेश, हरिशंकर और कमलेश जैसे कुम्हारों के अनुसार, दीये 50 से 100 रुपये सैकड़ा बिकते हैं। कुल्हड़ 200 से 500 रुपये सैकड़ा में उपलब्ध हैं। मुस्लिम शादियों में मिट्टी का तंदूर 800 से 1,000 रुपये तक में बिकता है। सनाहकी 400 रुपये सैकड़ा और तश्तरी 200 रुपये सैकड़ा की दर से बेची जा रही है। कारीगरों का कहना है कि मिट्टी लाने, तैयार करने और बर्तनों को पकाने में बहुत मेहनत लगती है। लेकिन लागत के मुकाबले मुनाफा कम मिलता है। चीनी झालरों, थर्माकोल और प्लास्टिक के बर्तनों का बढ़ता प्रचलन उनके कारोबार को प्रभावित कर रहा है। बुजुर्ग कुम्हार समाज नई पीढ़ी की कम रुचि को लेकर चिंतित है। उनका मानना है कि प्रोत्साहन न मिलने पर यह पारंपरिक कला विलुप्त हो सकती है।

प्रोफेसर रज्जू भैया विवि: स्टार्टअप के नवाचारों से गूंजा पीआरएसयू परिसर, 17 विश्वविद्यालयों के कुलपति जुटे

प्रयागराज। प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) विश्वविद्यालय (पीआरएसयू) परिसर बुधवार को स्टार्टअप के नवाचारों और तकनीकी उपलब्धियों का गवाह बना। यहां आयोजित पूर्वांचल स्टार्टअप संवाद–2026 में पूर्वांचल के 17 विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षक, प्रतिनिधि और विद्यार्थी जुटे। प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) विश्वविद्यालय (पीआरएसयू) परिसर बुधवार को स्टार्टअप के नवाचारों और तकनीकी उपलब्धियों का गवाह बना। यहां आयोजित पूर्वांचल स्टार्टअप संवाद–2026 में पूर्वांचल के 17 विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षक, प्रतिनिधि और विद्यार्थी जुटे। संवाद में 50 से अधिक स्टार्टअप ने अपने उत्पादों, तकनीकी नवाचारों और उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। इसका आयोजन पीआरएसयू और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) लखनऊ के तहत किया गया। इसके बाद राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय परिसर में नवनिर्मित शैक्षणिक सुविधाओं का लोकार्पण किया। इसके बाद उन्होंने स्टार्टअप प्रदर्शनी का अवलोकन किया और विभिन्न स्टॉल पर पहुंचकर नवाचारों के बारे में जानकारी ली। प्रदर्शनी में आपदा के समय राहत एवं बचाव कार्यों में मददगार डिसास्टर रेस्क्यू इंटेलिजेंस सिस्टम, दुर्घटना की सूचना देने वाली एक्सीडेंट अलर्ट तकनीक, सिकल सेल बीमारी से संबंधित नवाचार और फसल की निगरानी में मददगार फसल दृष्टि एवं स्मार्ट क्रॉप जैसे उत्पाद आकर्षण का केंद्र रहे। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवाओं में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर आधारित स्वास्थ्य सेतु एआई भी प्रदर्शित किया गया। राज्यपाल ने विभिन्न स्टार्टअप के स्टॉल पर पहुंचकर उनके उत्पादों और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी ली। उन्होंने स्टार्टअप से जुड़े नवाचारों को देखा और युवाओं की ओर से विकसित तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त की। आयोजन में युवाओं को उद्यमिता, नवाचार और तकनीक के माध्यम से नए अवसर तलाशने का मंच मिला।

संक्षिप्त

श्रीकृष्ण के अपमान पर सपा यूथ ब्रिगेड की दी धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी में समाजवादी पार्टी मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। कार्यकर्ताओं ने हजरतगंज थाने पहुंचकर उनके खिलाफ तहरीर दी और एफआईआर दर्ज करने की मांग की।मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड के प्रदेश सचिव प्रवेश यादव ने तहरीर देकर धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री ने भगवान श्रीकृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा, उनके नाम और बांसुरी बजाने की शैली को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणियां की हैं। साथ ही भगवान श्रीकृष्ण की तुलना भगवान श्रीराम से करते हुए ऐसी भाषा का इस्तेमाल किया, जो उचित नहीं है। उन्होने आरोप लगाया कि धीरेंद्र शास्त्री ने भगवान श्रीकृष्ण को लेकर विवादित बयान दिया है, जिससे करोड़ों श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने कहा कि एक भगवान की महिमा बताने के लिए दूसरे के स्वरूप या व्यक्तित्व को कमतर दिखाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। कार्यकर्ताओं ने पुलिस से मामले को गंभीरता से लेते हुए एफआईआर दर्ज करने और धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग की। प्रवेश यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व उपहास या तुलना का विषय नहीं है। वे प्रेम, करुणा, न्याय, नीति, साहस और धर्म की स्थापना के प्रतीक हैं। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों सनातन धर्म के आराध्य हैं। दोनों के व्यक्तित्व, लीलाओं और आदर्शों का अपना अलग महत्व है।



एलयू में समाजवादी छात्र सभा के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय एलयू के गेट नंबर–3 पर समाजवादी छात्र सभा के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संगीत रागी का पुतला फूंका। साथ ही उनकी तस्वीर को पैरों से रौंदा। छात्र संगठन के कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए प्रोफेसर पर जातीय टिप्पणी करने का आरोप लगाया। पुतला जलते ही मौके पर मौजूद पुलिसकर्मी उसे लेकर वहां से हट गए। कार्यकर्ताओं ने प्रोफेसर संगीत रागी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। अमित यादव ने कहा कि संगीत रागी जैसे लोग कुंठित विचारधारा के हैं। इन्हें सबसे पहले प्रोफेसर के पद से हटाया जाए। जिस व्यक्ति की सोच अच्छी नहीं है वह छात्रों को अच्छी शिक्षा कैसे दे सकता है। हमारी मांग है कि पूरे यादव समाज पर अभद्र टिप्पणी करने वाले व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। प्रदर्शन कर रहे आदित्य ने कहा कि संगीत रागी समाजवादी पार्टी के सम्मानित प्रवक्ता पर जातिगत टिप्पणी किया है। यह टिप्पणी यादव समाज को लेकर की गई है। यह सिर्फ व्यक्ति विशेष पर नहीं बल्कि पूरे समाज से अभद्रता है। हम लोग किसी भी स्थिति में सपा नेता मनोज काका और उन पर की गई जातीय टिप्पणी को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस प्रकार की अभद्र टिप्पणी व्यक्ति की छोटी सोच और मानसिक दिवालियापन का परिणाम है। इससे पहले ओम प्रकाश राजभर ने इसी प्रकार की टिप्पणी किया था। वहीं मौजूदा समय में कथा वाचक धीरेंद्र शास्त्री ने भी भगवान श्री कृष्ण का अपमान करने का काम किया है। जिस प्रकार से 2027 का चुनाव करीब आ रहा है वैसे ही यादव समाज को अपमान करने का चलन बढ़ गया है।

सड़क खुदाई के दौरान जेसीबी की चपेट में आने से महिला की मौत

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी में सड़क खुदाई के दौरान जेसीबी की चपेट में आने से 60 वर्षीय महिला की मौत हो गई। हादसा अंधे की चौकी के पास मल्टी केयर हॉस्पिटल के सामने हुआ। घटना के बाद चालक जेसीबी छोड़कर फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मशीन कब्जे में लेकर चालक की तलाश शुरू कर दी है। मृतका की पहचान सबिया (60), पत्नी छोटा, निवासी बेबी मार्टिन स्कूल के पास दुबग्गा के रूप में हुई। वह अपनी रिश्तेदार मेराज को देखने हॉस्पिटल जा रही थीं। इसी दौरान सड़क निर्माण कार्य में लगी जेसीबी को ड्राइवर बैक कर रहा था। तभी वहां से निकल रही सबिया पहिये के नीचे आ गई। हादसे की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। कुछ देर बाद मृतका के परिजन भी वहां पहुंच गए। उन्होंने घटना पर आक्रोश जताया। पुलिस ने उन्हें समझाकर शांत कराया। एहतियातन मौके पर पुलिस बल तैनात किया गया। पुलिस के मुताबिक, बुधवार सुबह करीब 11.40 बजे सड़क पर खुदाई का काम चल रहा था। इसी दौरान जेसीबी चालक मशीन पीछे कर रहा था। तभी वहां से हॉस्पिटल में रिश्तेदार से मिलने जा रही महिला पहिये के नीचे आ गई। हादसे में महिला की मौके पर ही मौत हो गई। घटना दुबग्गा इलाके की है। पुलिस ने जेसीबी कब्जे में ले ली है। फरार चालक की तलाश की जा रही है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। पुलिस का कहना है कि मामले में मिले तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

33 चीनी मिलों का इंडेंट जारी, शुरू हो गई गन्ना खरीद और पेराई

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों के लिए नए पेराई सत्र 2026–27 को लेकर अच्छी खबर सामने आई है। प्रदेश में चीनी मिलों ने गन्ना खरीद की तैयारियां तेज कर दी हैं। अब तक 33 चीनी मिलों की ओर से खरीद के लिए इंडेंट जारी किया जा चुका है, 9 चीनी मिलों में गन्ने की पेराई भी शुरू हो गई है। गन्ना विकास विभाग के अनुसार प्रदेश की 9 चीनी मिलों में पेराई का काम शुरू हो चुका है। इनमें एक सहकारी क्षेत्र और आठ निजी क्षेत्र की मिलें शामिल हैं। क्षेत्रवार देखें तो सहारनपुर की 3, लखनऊ की 3, मुरादाबाद की 2 और मेरठ की 1 चीनी मिल में गन्ने की पेराई शुरू हो गई है। अन्य मिलों ने भी पेराई शुरू करने से जुड़ी जरूरी तैयारियां पूरी कर ली हैं। 24 चीनी मिलों ने गन्ना खरीद के लिए इंडेंट जारी किया है। इन मिलों का दीपावली से पहले संचालन शुरू करने का प्रस्ताव है। वहीं, बाकी चीनी मिलें दीपावली के बाद अपना पेराई सत्र शुरू करेंगी।

चन्द्रबदनी परिसर के प्र. प्राचार्य/निदेशक डा. मूलचन्द्र शुक्ल ने समितियों से सम्बन्धित ली बैठक

डॉ सौम्या कबटियाल

चन्द्रबदनी (नैखरी), टिहरी गढ़वाल। श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय चन्द्रबदनी, (नैखरी) परिसर का नया प्रभारी प्राचार्य डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष संस्कृत को नियुक्त किया गया है। यह दायित्व उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा वरिष्ठता के आधार पर डॉ. महन्थ मौर्य की सेवानिवृत्ति के पश्चात् सौंपा गया है।

डॉ. शुक्ल पूर्व में भी राजकीय महाविद्यालय घाट,चमोली के प्रभारी प्राचार्य का दायित्व निर्वहन कर चुके हैं। उसके बाद राजकीय महाविद्यालय रामनगर में स्थानान्तरण हुआ।

नवीन प्रभारी प्राचार्य डॉ. शुक्ल को जिम्मेदारी सौंपे जाने के साथ ही परिसर में प्रशासनिक नेतृत्व की निरंतरता सुनिश्चित हुई है। डॉ. शुक्ल ने बैठक में कहा कि मेरी प्राथमिकता परिसर की शैक्षणिक प्रगति,गतिविधियों, अनुशासन, प्रशासनिक



कार्यों,विद्यार्थियों एवं संस्थागत सर्वाङ्गीण विकास एवं विभिन्न विभागों के साथ समन्वय आदि स्थापित कर उनकी प्रगति को प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाने की है। संस्कृत विभाग में उनके अनुभव से परिसर की शैक्षणिक गतिविधियों को नई दिशा मिलने की उम्मीद है।

इस अवसर पर परिसर के प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों ने नए प्रभारी प्राचार्य को शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ देते हुए आशा और विश्वास व्यक्त की कि उनके नेतृत्व में परिसर निरंतर शैक्षणिक प्रगति आदि की दिशा में आगे बढ़ेगा।

चंद्रबदनी परिसर में नेतृत्व परिवर्तन को विश्वविद्यालय परिसर की प्रशासनिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था की निरंतरता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। साथ ही प्रभारी प्राचार्य डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल द्वारा महाविद्यालय की विभिन्न समितियों के कार्यों एवं गतिविधियों की समीक्षा हेतु बैठक भी आयोजित की गयी। बैठक में समितियों के संयोजकों एवं सदस्यों से उनके कार्यों की प्रगति की जानकारी लेते हुए निर्धारित दायित्वों का समयबद्ध एवं प्रभावी रुप से निर्वहन करने पर बल दिया गया।

उन्होंने सभी समितियों से आपसी समन्वय स्थापित कर परिसर की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालित करने का आह्वान किया।

गंगानाथ झा परिसर के सदस्यों ने ली सतर्कता जागरूकता शपथ

प्रयागराज। शिक्षा मंत्रालय के पत्र संख्या ई–34013/2/2026–अपह.प दिनांक 15.10.2026 के अनुपालन में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अन्तर्गत सतर्कता प्रतिज्ञा/शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिसरीय गंगासभागार में निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" के मार्गदर्शन एवं अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में सतर्कता सप्ताह के अन्तर्गत परिसरीय सदस्यों ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध तत्परता के साथ खड़े रहने तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में एकजुट रहने की प्रतिज्ञा की। परिसरीय सदस्यों को निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" ने सतर्क



रहने एवं तत्सम्बन्धी दायित्वों को पूर्ण करने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में उन्होंने देश के समक्ष आने वाली प्रत्यक्ष एवं छद्म चुनौतियों का सामना करने को प्रेरित किया। उनके अनुसार यदि देश के समस्त नागरिक अपने दायित्वों का शुद्ध अंतरूकरण के साथ पालन करें तो हमारा देश पुनरू अपने गौरव को प्राप्त कर सकता है।

उन्होंने भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टाचारी दोनों को दीमक सदृश बताया जो किसी भी सम्पन्न राष्ट्र के अस्तित्व पर संकट ला सकता है। कार्यक्रम संयोजक प्रो. देवदत्त सरोदे ने सतर्क नागरिकों को राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति बताया। उन्होंने प्रत्येक नागरिक द्वारा अपने अपने कर्त्तव्यों का पालने करने से भ्रष्टाचार का समूल नाश किया जा सकता है।

विभिन्न उद्धरणों द्वारा उन्होंने सभी को भ्रष्टाचार, कदाचार एवं द्वेष की भावना से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन राजेशकान्त तिवारी ने किया। इस अवसर पर परिसर के सहनिदेशक प्रो. देवदत्त सरोदे, प्रो. अपराजिता मिश्र (विभागाध्यक्षा पाण्डुलिपि एवं हस्तलेख विभाग), डॉ. मोनाली दास, डॉ. शुभश्री दास, राजेशकान्त तिवारी (संगणक विशेषज्ञ), अंकित मिश्र (सहायकाचार्य), डॉ. मंगलदेव त्रिपाठी, संजय कुमार मिश्र (अनुभाग अधिकारी) समेत समस्त परिसरीय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारीगण, शोध छात्र–छात्राएं एवं अन्य छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

अपनी मांगों के समर्थन में तीसरे दिन भी काली पट्टी बांधकर क्रिया प्रदर्शन

प्रतापगढ़। डिग्री शिक्षकों द्वारा फेडरेशन ऑफ़ यूनिवर्सिटी एंड कॉलेजेज एसोसिएशन के आह्वान पर अपनी मांगों के समर्थन में आज तीसरे दिन भी काली पट्टी बाँधकर प्रदर्शन करते हुए शिक्षण कार्य किया। शिक्षकों को संबोधित करते हुए एम डी पी जी कॉलेज इकाई शिक्षक संघ के अध्यक्ष प्रोफेसर अरुण कुमार तिवारी नें कहा कि पुरानी पेंशन, यू जी सी द्वारा संस्तुत सेवानिवृत्ति की आयु 65 वर्ष करने, चिकित्सकीय अवकाश अनुमन्य करने, स्व पोषित शिक्षकों का स्थायीकरण, प्रोफेसर पद नाम अर्हता तिथि से देनें जैसी माँगों को लेकर सरकार की उदासीनता के कारण शिक्षकों में भारी असन्तोष व्याप्त है जो कि सरकार को भारी पड़ सकता है । इकाई महामन्त्री प्रोफ़ेसर पीयूष कान्त शर्मा नें भी कहा कि शिक्षकों की अनेकानेक मांगें दीर्घ काल से



लंबित हैं जिन पर सरकार को सौहार्दपूर्वक विचार करना चाहिए । इस अवसर प्रोफ़ेसर अरविन्द मिश्र, प्रोफेसर सन्तोष कुमार पाण्डेय, प्रोफेसर उषा तिवारी, प्रोफेसर निशा सिंह, प्रो० ऊषा दूबे, प्रो० रमेश चन्द्र शुक्ल, प्रो० अरविन्द मौर्य, डॉ० प्रमथेश पाण्डेय, डॉ० अरुण कुमार वर्मा, डॉ० मनीष सिंह, डॉ० रेखा मिश्रा, डॉ० राजेन्द्र मिश्रा, डॉ० मुक्ता वर्मा, डॉ० सीमा त्रिपाठी, डॉ० अनीश द्विवेदी, डॉ० स्वामी नाथ तिवारी आदि शिक्षक गण प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कथाकार प्रेम कुमार त्रिपाठी `प्रेम' के लघुकथा संग्रह `नील कमल खिल गया' का लोकार्पण 10 नवंबर को

श्री सच्चा बाबा आश्रम में आयोजित होगा साहित्यिक समारोह, 75 लघुकथाओं से सजा है संग्रह



प्रतापगढ़। जनपद के सुप्रसिद्ध कथाकार प्रेम कुमार त्रिपाठी 'प्रेम' के बहुप्रतीक्षित लघुकथा संग्रह 'नील कमल खिल गया' का लोकार्पण आगामी 10 नवंबर 2026 को किया जाएगा। इस अवसर पर जनपद हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रतापगढ़ के तत्वावधान में एक भव्य साहित्यिक समारोह का आयोजन दोपहर 12 बजे से श्री सच्चा बाबा आश्रम, सई तट, प्रतापगढ़ में होगा। कार्यक्रम के आयोजक अखिल नारायण सिंह 'अकेला' एवं संयोजक नियाज प्रतापगढ़ी ने संयुक्त रूप से बताया कि समारोह की अध्यक्षता पट्टी स्थित महाविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. मिथिलेश त्रिपाठी करेंगे। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार प्रतिभा पांडेय (सुल्तानपुर) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगी। वहीं, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व बाल न्यायाधीश डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न' विशिष्ट अतिथि तथा श्री सच्चा बाबा आश्रम के महंत मनोज ब्रह्मचारी अति विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह की गरिमा बढ़ाएंगे।

समारोह के संरक्षक, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रतापगढ़ के महामंत्री, इंटर कॉलेज के प्रबंधक एवं प्रख्यात साहित्यकार पंडित अनिल प्रताप त्रिपाठी 'प्रवात' ने जनपद के साहित्यकारों एवं साहित्य प्रेमियों से इस महत्वपूर्ण साहित्यिक आयोजन में सहभागिता की अपील की है। कथाकार प्रेम कुमार त्रिपाठी 'प्रेम' ने बताया कि उनके लघुकथा संग्रह 'नील कमल खिल गया' में समाज को नई दिशा देने वाली 75 लघुकथाएं समाहित हैं। ये लघुकथाएं सामाजिक सरोकारों, मानवीय संवेदनाओं और जीवन के विविध पहलुओं को अभिव्यक्त करते हुए पाठकों के मानस पटल पर गहरी छाप छोड़ेंगी।

दीप करता है नर्तन

(छप्पय)

जुगनू चमके खेत चाँदनी बिखरे आँगन।
झींगुर की झंकार दीप करता है नर्तन।
तोरण वंदनवार हर्ष भर स्वागत करते।
शुभ मुहूर्त कल्याण बैठकर पूजन करते।
अद्भुत प्यारी यह छटा, पल पल सबको भा रही।
अमा, पूर्णिमा सी लगे रात उजाली गा रही।।

जगमग करते मॉल मगर धूमिल हैं अंबर
शहरों की यह रीति बताते सभी दिगंबर।
भूल प्रकृति की छाँव जाल कंक्रीट बिछाया।
अंधकार के बीच ढूँढते फिरते साया।
एक तरफ है मौन–तप एक तरफ हुड़दंग है।
जीने का अंदाज ही गाँव–शहर का फर्क है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

हर मुश्किल लक्ष्य हासिल कर रही हैं बेटियां– डॉ. अंकिता राज

नैनी, प्रयागराज। मिशन शक्ति के अंतर्गत बेटियों के सम्मान, शिक्षा, स्वावलंबन और सुरक्षा को लेकर कमला स्मारक इंटर कॉलेज बलापुर में बेटी संवाद नई उड़ान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी प्रयागराज की



धर्मपत्नी समाजसेविका डॉ अंकिता राज द्वारा माता सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत के साथ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ संबंधित नाटिका प्रस्तुत की गई। अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि डॉ अंकिता राज ने कहा कि आज बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम लहराते हुए लक्ष्य को प्राप्त कर रही है। उन्होंने बच्चों के बीच जाकर उनसे प्रश्न किये तथा बच्चों द्वारा पूंछे गए प्रश्नों का जबाब दिया। इससे पूर्व विद्यालय की प्रधानाचार्या अलका विश्वकर्मा ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों का सारस्वत सम्मान किया। प्रबंधक अनिल विश्वकर्मा ने अपने उद्बोधन में आगत अतिथियों का आभार व्यक्त किया। प्रधान नीलम पथिक, समाजसेवी राजेश विश्वकर्मा, पत्रकार जगदम्बा शुक्ल, शिक्षिका नीतू चौधरी आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक, छात्र छात्राएं, थाने की महिला एसआई, पुलिस एवं क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे।

परिषदीय विद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण का पाठ

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार शिक्षा के साथ विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने पर भी जोर दे रही है। प्रदेश के लगभग 1.32 लाख से अधिक परिषदीय विद्यालयों में 1 से 7 नवंबर तक ब्रिक्स सतत जीवनशैली सप्ताह मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में पर्यावरण–अनुकूल आदतें अपनाने और टिकाऊ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना है। मिशन लाइफ के सात विषयों पर आधारित सप्ताह में प्रदेश के सभी विद्यालयों में अध्ययनरत लगभग 1.42 करोड़ से अधिक विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने और अपने घर–समुदाय तक टिकाऊ जीवनशैली का संदेश पहुंचाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कार्यक्रम में इको क्लबों की भूमिका महत्वपूर्ण है। सप्ताह की गतिविधियों की जानकारी और आवश्यक सूचना–शिक्षा–संचार सामग्री निर्धारित पोर्टल मबवबसनइे.मकनबंजपवद.हवअ.पद से प्राप्त करने की व्यवस्था है। सप्ताह के प्रत्येक दिन एक विषय पर गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। 1 नवंबर को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, 2 नवंबर को ऊर्जा बचाने और 3 नवंबर को जल संरक्षण से जुड़ी गतिविधियां आयोजित की जा चुकी हैं। 4 नवंबर को टिकाऊ खाद्य प्रणालियों पर केंद्रित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को टिकाऊ जीवनशैली के महत्व से परिचित कराया गया। 5 नवंबर को एकल उपयोग प्लास्टिक से दूरी, 6 नवंबर को ई–कचरा कम करने और 7 नवंबर को कचरा कम करने पर केंद्रित कार्यक्रम होंगे।बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने कहा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए भी प्रतिबद्ध है। ब्रिक्स सतत जीवनशैली सप्ताह के माध्यम से विद्यार्थियों को ऊर्जा और जल संरक्षण, प्लास्टिक के कम उपयोग तथा कचरा प्रबंधन जैसी आदतों से जोड़ा जा रहा है।

उत्तर मध्य रेलवे

सं. 74-WOE-Tender/Sr. DEN-II/PRYJ/9420262027 दिनांक : 02.11.2026

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल अभियंता / द्वितीय / प्रयागराज के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत प्रयागराज-कानपुर खंड में विभिन्न स्थानों पर गैंग रेस्ट शेडों का निर्माण।

क्र.सं.	निविदा सं0	कार्य का अनुमानित मूल्य (रु.)	बयाने की रकम (रु.)
1	199	1,20,40,057.00	2,40,800.00

कार्य का विवरण : वरिष्ठ मंडल अभियंता / द्वितीय / प्रयागराज के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत प्रयागराज-कानपुर खंड में विभिन्न स्थानों पर गैंग रेस्ट शेडों का निर्माण। कार्य समापन की अवधि : 12 (बारह) माह, निविदा खुलने की तिथि : 27.11.2026, 'सिमिलर वर्क' के लिये न्यूनतम बांछनीय आधार : कोई भी सिविल इंजीनियरिंग का कार्य।

नोट: 1. ई-निविदा प्रपत्र सभी निविदादाताओं को निःशुल्क निर्गत किये जायेंगे। 2. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.inapa.gov.in पर समय 13:30 बजे तक निविदा खुलने की निर्धारित तिथि 27.11.2026 तक उपलब्ध है। 3. उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु बेन्डरों को चाहिये कि वे अपने आपको I.T. Act-2000 के अन्तर्गत C.C.A. द्वारा जारी डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत कराये। 4. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित पइाइनेंशियल रेट पेज पर ही दिखाएंगे हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फार्म/लेटरहेड पर यदि संलग्न हैं तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 5. निविदादाता अपनी निविदा के साथ निर्धारित प्रोफार्मा पर एक ब्लाण-पत्र, जैसा निविदा प्रपत्र में उल्लिखित है, प्रस्तुत करेंगे, जिसके अभाव में उनकी निविदा अविचारणीय होगी तथा निरस्त कर दी जायेगी। 6. माल एवं/अथवा सेवाओं के सप्लायर/ठेकेदार समय-समय पर निर्धारित जी.एस.टी. एक्ट तथा नियमों के अन्तर्गत होंगे। 7. संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदादाता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिये। 8. निविदा सूचना को उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट www.ncr.indianrailways.gov.in पर भी अपलोड कर दिया गया है। 9. बयाने की राशि केवल नेट बैंकिंग अथवा गेटवे भुगतान के रूप में ही स्वीकार की जायेगी। 10. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 11. ऑनलाइन निविदा खुलने की तिथि 27.11.2026 को समय 13:30 बजे तक प्रस्तुत की जा सकती है। 12. निविदादाता को जी.सी.सी. 2022 भाग-I के पैरा 10 से 18 के अनुपालन में उल्लिखित आवश्यक दस्तावेजों को निविदा के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न करना है अन्यथा उनकी निविदा अपूर्ण मानी जायेगी एवं तदनुसार अविचारणीय होगी। 2509/26 (PH)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

फिर हेलीकॉप्टर हादसा

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि उत्तराखंड में तीर्थयात्रियों को ला रहा एक हेलीकॉप्टर फिर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में बद्रीनाथ से देहरादून लौट रहे पांच तीर्थयात्रियों और पायलट समेत छह लोगों की मौत हो गई। जटिल भौगोलिक परिस्थितियों के चलते पहाड़ी इलाकों में हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने पर यात्रियों के बचने की संभावना ना के बराबर होती है। यदि राहत व बचाव का कार्य शुरू भी किया जाए तो विषम परिस्थितियों में यह संभव नहीं हो पाता। लेकिन बेहद ऊंचे हिमालयी इलाकों में हेलीकॉप्टर सेवा को लेकर जो अतिरिक्त सुरक्षा सावधानी बरती जानी चाहिए, वह नजर नहीं आती। लगता हेलीकॉप्टर सेवा संचालित करने वाली कंपनियां यात्रियों की सुरक्षा के बजाय अपने मुनाफे को ही प्राथमिकता दे रही हैं। विडंबना यह है कि उत्तराखंड में चारधाम यात्रा के दौरान ऐसे हादसे लगातार होते रहे हैं। बल्कि हादसों के बाद कुछ समय के लिये हेलीकॉप्टर सेवाओं को रोका भी गया था। लेकिन फिर 'वही ढाक के तीन पात' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में इस हिमालयी राज्य में हेलीकाप्टर हादसे और इमरजेंसी की स्थिति में हेलीकॉप्टर उतारने की कई घटनाएं सामने आई हैं। जिसके चलते निजी कंपनियों द्वारा हवाई सेवा के परिचालन के तौर–तरीकों और तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े होते रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस बाबत गत वर्ष जुलाई में संसद में नागरिक उड्डयन मंत्रालय की तरफ से आधिकारिक जानकारी संसद को दी गई थी। जिसमें बताया गया कि साल 2020 के बाद देश में बारह हेलीकॉप्टर दुर्घटनाएं हुई थी। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि इनमें से सात दुर्घटनाएं सिर्फ उत्तराखंड में हुई थीं। इन हादसों में जिन तीस लोगों की मृत्यु हुई, उनमें से इक्कीस सिर्फ उत्तराखंड में हुए हादसों में मारे गए। जिससे उत्तराखंड में चारधाम यात्रा में हवाई सेवा देने वाली कंपनी की सुरक्षा नीति और विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल उठने स्वाभाविक ही हैं। इन हादसों के बाद हुए व्यापक विरोध के चलते कुछ समय हेलीकॉप्टर सेवा का परिचालन स्थगित भी किया गया था।यहां सवाल उठना स्वाभाविक है कि इन हादसों के बाद भी नियामक संस्थाएं तीर्थयात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध कराने वाली कंपनी की जवाबदेही क्यों तय नहीं कर रही हैं? सवाल यह भी है कि तीर्थ यात्रियों का जीवन खतरे में डालने वाली कंपनी के मालिक व अधिकारियों को क्या कभी जवाबदेह ठहराया गया? क्या कंपनी पर कभी जुर्माना लगाया गया? बीच में सेवा को स्थगित किया था,तो क्या इस सेवा को फिर से शुरू करने के लिये सुरक्षा मानकों पर कंपनी खरी उतरी थी? यदि खरी उतरी थी तो यह नया हादसा कैसे हुआ? जाहिर है, इस हेलीकॉप्टर सेवा के दौरान सिर्फ कंपनी के मुनाफे को प्राथमिकता दी जा रही है। यह सर्वविदित है कि बद्रीनाथ व केदारनाथ आदि तीर्थ बेहद ऊंचाई पर स्थित हैं। जहां लगातार मौसम अचानक बदलता रहता है। मौसम खराब होने पर हवाई यात्रा जोखिमभरी होती है। जिसके चलते बदलते मौसम को लेकर भी सतर्कता बरतनी बेहद जरूरी है। वहीं दूसरी ओर तीर्थयात्रियों का हादसे का शिकार होना, श्रद्धालुओं की आस्था व विश्वास को भी प्रभावित करता है। उनके मन में कई तरह के संशय पैदा करता है। यह विडंबना है कि इस हिमालयी राज्य में धार्मिक पर्यटन में वृद्धि और हेलीकॉप्टर से श्रद्धालुओं की आवाजाही बढ़ने के बावजूद सुरक्षा के मानकों के प्रति सरकार ने गंभीरता नहीं दिखायी। यदि शुरुआती हादसों के बाद कंपनी का लाइसेंस स्थगित करके जवाबदेही तय की जाती तो शायद फिर इन दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होती। फिर सुरक्षित सफर के लिये हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध कराने वाली कंपनी आवश्यक सावधानी का अनिवार्य रूप से पालन करती। यह निर्विवाद तथ्य है कि सुविधाओं के विस्तार के साथ इस संवेदनशील इलाके में सुरक्षा सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। मौसम के तेवर में बदलाव और मामूली तकनीकी त्रुटि तीर्थयात्रियों के लिये जानलेवा ही साबित होती है। यह विडंबना ही कि सरकारें तीर्थस्थलों व पर्यटन स्थलों पर यात्रियों को लुभाने के लिये तमाम तरह के सब्जबाग तो दिखाती हैं लेकिन जोखिम मुक्त यात्रा सुनिश्चित करने को लेकर प्रतिबद्धता नजर नहीं आती।

हांफते-खांसते भाजपा का समर्थन

डॉ. दीपक पाचपोर

देश की राजधानी दिल्ली समेत तमाम बड़े शहरों में हवा सांस लेने लायक नहीं रह गई है। पहले पानी इतना प्रदूषित कर दिया गया कि जल शुद्धिकरण यंत्र यानी वॉटर प्यूरीफायर अनिवार्यता बन चुके हैं।

केंद्र में नरेन्द्र मोदी के बारह सालों के शासन का हासिल यह है कि सामान्य बुद्धि को ताक पर रखकर धर्म के नाम पर खुद को नुकसान पहुंचाने से भी लोग अब झिझक नहीं रहे हैं। चंद दिनों में दीपावली का पर्व शुरु हो रहा है। फसल कटाई के बाद का यह उत्सव अब प्रदूषण की कालिमा से घिर चुका है। बरसों से दीपावली के पहले और बाद में चिंता का एक बड़ा विषय वायु और ध्वनि प्रदूषण बन गया है। देश की राजधानी दिल्ली समेत तमाम बड़े शहरों में हवा सांस लेने लायक नहीं रह गई है। पहले पानी इतना प्रदूषित कर दिया गया कि जल शुद्धिकरण यंत्र यानी वॉटर प्यूरीफायर अनिवार्यता बन चुके हैं। हर संपन्न, सक्षम घर में वॉटर प्यूरीफायर मिल जाएगा। जहां नहीं होगा, वहां बोतलों में बंद पानी खरीदा जाता है। गरीबों के लिए यह अब भी विलासिता की चीज है कि पानी शुद्ध करने वाली मशीन वे अपने घर में लगा सकें। उनके घरों में तो नल ही नहीं होता, तो उससे निकलने वाले पानी को शुद्ध करना तो दूर की बात है। वे अब भी नगर निगम के बनाए नलों, तालाबों या कुओं से पानी भरते हैं और कई इलाकों में दूर–दराज से पानी ढोकर लाते हैं। पानी के बाद अब अगला हमला हवा पर हुआ है। प्रकृति के दिए अनमोल उपहारों यानी हवा और पानी पर अब अमीरों का कब्जा होता जा रहा है। हवा को बोतल में बंद करके तो अभी नहीं बेचा जा रहा, लेकिन अब एयर प्यूरीफायर खूब बिकने लगे हैं। जिन घरों में यह नहीं होते, वहां अंदर रखे पौधों से हवा को शुद्ध बनाने की कोशिश की जाती है। और इससे भी काम न बने तो फिर मास्क है ही। कोविड काल ने लोगों को मजबूरी में मास्क पहनना सिखाया, अब लोग इसे आदत की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। हालांकि गरीबों के लिए यह भी एक विलासिता ही है। भारत में पूंजीवाद का ऐसा घिनौना स्वरूप देखने मिलेगा, यह कल्पना तो पूंजीवाद के कट्टर समर्थकों ने भी नहीं की होगी। जिसमें गरीबों और असहायों से उनके जीने के मूल आधार हवा–पानी को ही उनके लिए अनुपलब्ध करा दिया जाए। यह अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि कड़वा सच है कि देश के कई शहरों की हवा सांस लेने लायक नहीं रह गई है। वायु गुणवत्ता इंडेक्स यानी एक्यूआई में दो सौ, तीन सौ के आंकड़े पार करना तो अब मामूली बात हो गई है, जबकि यह प्राणवायु नहीं जहरीली हवा होती है। हर साल अक्टूबर से लेकर दिसंबर–जनवरी तक यही हालात रहते हैं। दिल्ली के आसपास तो पराली जलाने को लंबे अरसे तक प्रदूषण का कारण बताया जाता रहा। पर जब पराली नहीं जलती, तब भी आकाश में धुएं और धुंध की मोटी परत दिखाई देती है। ऊपर से पटाखों को जलाने से हालात और गंभीर हो जाते हैं। प्रदूषण को देखते हुए अब कहा जाने लगा है कि दिल्ली में रहने वालों की औसत आयु में से आठ साल कम हो गए हैं। ऐसे में कायदे से समाज को ही पहल करनी चाहिए कि वह वायु शुद्ध बनाए रखने में अपना योगदान दे। लेकिन भाजपा ने इसमें भी धर्म को घुसा लिया है। मानो हिंदुत्व की माला जपने वालों को शुद्ध वायु मिलेगी और बाकी दमघोंटू माहौल में रहने को अभिशप्त रहेंगे। नौबत ऐसी आ गई है कि पुलिस भी अब भाजपा के दबाव में दिख रही है। बीते 25 अक्टूबर को दिल्ली पुलिस ने से नो टू क्रैकर्स, यस टू ग्रीनर दीवाली यानी पटाखों को कहें ना, हरित दिवाली को हां और जानवरों की सुरक्षा से जुड़ा एक संदेशध्वीडियो पोस्ट किया था। लेकिन 4–5 घंटों के भीतर इसे सोशल मीडिया हैंडल से हटा लिया गया। यह पहली बार नहीं है जब दिल्ली प्रशासन ने दिवाली के दौरान पटाखों को लेकर अपना रुख बदला है। 2024 की दीपावली से पहले, दिल्ली सरकार ने 1 जनवरी, 2025 तक सभी पटाखों को बनाने, बेचने, स्टोर करने और फोड़ने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया था। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने प्रतिबंध को ठीक से लागू न करने की आलोचना की और सुझाव दिया कि सरकार इसे स्थायी करने पर विचार करे। दिसंबर 2024 में, दिल्ली सरकार ने कोर्ट को बताया कि उसने पटाखों पर साल भर का बैन लगा दिया है। लेकिन, जल्द ही स्थिति बदल गई। अप्रैल 2025 में, सुप्रीम कोर्ट ने प्रतिबंध ा में ढील देने से मना कर दिया, लेकिन अक्टूबर में उसने दिवाली के दौरान कुछ समय के लिए दिल्ली–एनसीआर में ग्रीन पटाखे बेचने और इस्तेमाल करने की इजाजत दे दी। कोर्ट ने कहा कि इन पटाखों को नेशनल एनवायर्नमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (नीरी) के तय मानक को पूरा करना होगा, और सिर्फ तय समय के दौरान ही इनके इस्तेमाल की इजाजत दी। दिल्ली सरकार और केंद्र ने इस ढील का समर्थन किया। उस समय शहर का एक्यूआई लगभग 500 तक पहुंच गया, जो गैस चेंबर जैसा खतरनाक था। अब भी हालात उसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इधर मुंबई में भी हवा खराब हो चुकी है। ऐसे में हाईकोर्ट और बीएमसी ने पर्यावरण के अनुकूल दीपावली मनाने की मुहिम छेड़ी और कुछ चर्चित लोगों से इसके लिए वीडियो बनवाए। दीया मिर्जा, अभिनेत्री माधुरी दीक्षित और निशिगंधा वाड, तथा क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे इसमें शामिल थे। इसमें दीया मिर्जा की पटाखों रहित दीपावली मनाने की अपील पर विवाद खड़ा हो गया है। क्योंकि मुंबई भाजपा के प्रमुख अमित सातम को यह रास नहीं आया। सातम ने लिखा, हमें दिया मिर्जा से यह सीखने की जरूरत नहीं है कि दीवाली कैसे मनानी है। हमारी परंपराएं हमारी संस्कृति में गहराई से रची–बसी हैं।

फिर भी संघ–भाजपा का राग घुसपैठिया जारी!

मोदीशाही के अंत की शुरूआत हो गयी है। 1 नवंबर की इंडिया ब्लाक समेत तमाम विपक्ष की रामलीला मैदान की विशाल रैली ने, बिगुल बजाकर मोदीशाही के अंत की शुरूआत का ऐलान किया है। देश भर में तेजी से लोगों की जुबान पर चढ़ते श्वोट चोरीश के नारे का मुकाबला करने की कोशिश में, संघ–भाजपा जोड़ी जिस तरह के न सिर्फ भोंथरे बल्कि बाकायदा पिटे हुए हथियारों का सहारा लेने पर मजबूर नजर आती है, वह एक प्रकार से अंत की इस शुरूआत का ही कबूलनामा है। जाहिर है कि लड़ाई में पिटे हुए हथियारों का सहारा लेना, मन से बाजी में हार मान लेने की ही निशानी होता है। घुसपैठियों के न सिर्फ घुस आने बल्कि छा जाने का सरासर झूठा सांप्रदायिक डर फैलाना ही वह पिटा हुआ हथियार है, जिसका मतदाता सूचियों से लेकर चुनाव संचालन तक, समूची चुनाव व्यवस्था में ईमानदारी यानी निष्पक्षता सुनिश्चित किए जाने से जुड़ी मांगों पर केंद्रित जन–आंदोलन के खिलाफ, संघ–भाजपा अपने मुख्य हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। जैसाकि अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है, मौजूदा निजाम के चाणक्य कहलाने वाले, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने ही श्वोट चोरीश के खिलाफ जनतंत्र की परवाह करने वाली सभी शक्तियों तथा लोगों के व्यापक अभियान के खिलाफ, श्घुसपैठिया आया, घुसपैठिया आयाश को हथियार बनाने की शुरूआत की थी। इस व्यापक जन–लामबंदी में दरार डालने की कथित चाणक्य नीति आजमाने में ही अपनी सारी चतुराई लगाते हुए, अमित शाह ने छांटकर राहुल गांधी तथा कांग्रेस को निशाना बनाते हुए यह दावा किया था कि, वे घुसपैठियों को बचाने के लिए ही एसआईआर में वोट कटने के वोट चोरी होने का झूठा शोर मचा रहे थे। याद रहे कि इस तरह, एसआईआर के नाम पर करोड़ों की संख्या में, 2024 के आम चुनाव में मतदान करने वाले मतदाताओं के नाम काटे जाने को घुसपैठिया–विरोधी कार्रवाई बताकर सही ठहराने की कोशिश, कोई साधारण राजनीतिक नेता नहीं कर रहा था बल्कि दुनिया के सबसे ज्यादा आबादी वाले देश के गृहमंत्री के पद पर बैठा व्यक्ति कर रहा था। और यह दावा इसके बावजूद किया जा रहा था कि मोदाशाही के बारह साल से ज्यादा में संसद में पूछे गए प्रश्नों से लेकर, सूचना का अधिकार के तहत पूछे गए प्रश्नों तक के जवाब में, खुद गृह मंत्रालय द्वारा आधिकारिक रूप से बार–बार यह माना गया था कि सरकार के पास श्घुसपैठियोंश के संबंध में संख्या आदि की कोई ठोस जानकारी ही नहीं है! वास्तव में एसआईआर से भी पहले, संघ परिवार के सांप्रदायिक प्रचार से संचालित घुसपैठियों की अंधाधुंध खोज का, आम जनता के लिए ऐसा ही तकलीफदेह अभ्यास, असम में हुआ था। इसका नाम था, एनआरसी का अद्यतनकरण। याद रहे कि इस प्रक्रिया को मोदी–शाह की सरकार देश भर में लागू करना चाहती थी। अब चोर दरवाजे एसआईआर के नाम पर, वही खेल खेलने की कोशिश की जा रही है। और असम में एनआरसी का क्या हुआ? बेशक, बांग्लादेश से लगती हुई सीमा वाला राज्य होने के चलते, असम में 1971 में बांग्लादेश की स्थापना के दौर की उथल–पुथल के दौरान तथा उसके बाद भी, रोजी–रोटी की तलाश में बांग्लादेश से गरीब मजदूरों के आने का सिलसिला चलता रहा था। इसी मुद्दे को लेकर 1980 के दशक में असम में उग्र–बांग्लादेशी–विरोधी आंदोलन भी चला था, जिसका अंत 1985 के असम समझौते पर हुआ था। इसी समझौते के एक प्रावधान के आधार पर और भाजपा व संघ परिवार के अनवरत प्रचार के दबाव में तथा सुप्रीम कोर्ट के अनुमोदन से, भाजपा के राज में असम में एनआरसी कराया गया। हजारों करोड़ रुपए फूंक कर और सैकड़ों जानें कुर्बान करने तथा समूची जनता तथा खासतौर पर गरीब, अशिक्षित, सामाजिक रूप से कमजोर लोगों तथा महिलाओं को बेशुमार तकलीफों से गुजारने के बाद, एसआईआर की ही तरह नागरिकता–जांच की इस प्रक्रिया के अंत में, करीब 20 लाख असमवासियों की नागरिकता को श्संदिग्धश करार दिया गया था। लेकिन, अंत में जब यह सच सामने आया कि संघ के प्रचार और उसकी अपेक्षाओं के विपरीत, इस प्रक्रिया में अपनी नागरिकता साबित न कर पाने वालों में दो–तिहाई हिंदू ही थे, जबकि मुसलमान एक–तिहाई से भी कम थे, तो संघ परिवार को पल्टी मारने में देर नहीं लगी और भाजपा की राज्य सरकार ने सिर्फ एनआरसी को नामंजूर ही नहीं किया बल्कि एनआरसी कराने वाले उच्चाधिकारियों को तरह–तरह के मुकद्दमों में भी फंसा दिया। और इस तरह, यह पूरी कसरत सिर्फ इसलिए जनता के लिए अकारण मुसीबत बनकर रह गयी कि उसके नतीजे, घुसपैठियों के खतरे के संघ परिवारी प्रचार से मेल नहीं खाते थे। काफी हद तक ऐसा ही किस्सा, एसआईआर का रहा है, जिसके पीछे भी श्घुसपैठियों के खतरेश के बेतहाशा अतिरंजित संघ–भाजपायी प्रचार से बनी धारणाएं ही थीं। यह कोई संयोग ही नहीं है कि बिहार से 2025 के जून में जब एसआईआर की प्रक्रिया की शुरूआत हुई थी, तभी से न सिर्फ भाजपा की केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा और संघ कुनबे द्वारा नागरिकता जांच की ओर इशारा करने वाली इस प्रक्रिया की समूची डिजाइन की, विपक्ष की आलोचनाओं के सामने, यह कहकर हिमायत की जा रही थी कि यह मतदाता सूचियों को घुसपैठियों से शुद्घ करने के लिए जरूरी था बल्कि खुद चुनाव आयोग ने भी बाकायदा अपनी विज्ञप्ति में मतदाता सूचियों में श्विदेशी अवैध प्रवासियों के नामों की मौजूदगीश को, इस अभूतपूर्व कसरत का एक प्रमुख कारण बताया गया था। हैरानी की बात नहीं है कि जब बिहार में एसआईआर की प्रक्रिया पूरी हुई, मीडिया और विपक्ष के भी बार–बार पूछने के बावजूद, चुनाव आयोग ने इस सरल से सवाल का जवाब देने से इंकार कर दिया कि जिन एक करोड़ से कुछ कम लोगों के नाम इस प्रक्रिया में मतदाता सूचियों से काटे गए थे, उनमें से कितने नाम विदेशी नागरिक होने के आधार पर काटे गए थे! वजह बहुत सरल थी। छरू करोड़ से ज्यादा मतदाताओं में ऐसे लोगों की संख्या 600 भी नहीं थी। उनमें भी नेपाली महिलाओं की संख्या ही ज्यादा थी, जिनका ससुराल बिहार में है। मुसलमानों की संख्या, पांचवां हिस्सा भी नहीं थी, जबकि संघ परिवार के आख्यान में तो श्घुसपैठियाश और मुसलमान समानार्थी ही हैं। यह दिलचस्प है कि उसके बाद से चुनाव आयोग ने तो एसआईआर प्रक्रिया के दौरान एक बार भी यह बताना गवारा नहीं किया है कि इस प्रक्रिया में कितने श्घुसपैठिएश पकड़े गए हैं, लेकिन संघ परिवार के इसी बहाने से मतदाता सूचियों की चुनाव आयोग द्वारा सत्ताधारी पार्टी के अनुकूल काट–छांट की हिमायत करने में, कोई कमी नहीं आयी है। अमित शाह, वोट चोरी के आरोपों के सामने, इसी सिलसिले को आगे बढ़ा रहे थे। यह भी याद रहे कि अमित शाह द्वारा उक्त दावा इसके बावजूद किया जा रहा था कि तब तक, अब भी अधूरी एसआईआर की प्रक्रिया में, 2024 की मतदाता सूचियों में से 13 करोड़ 30 लाख से ज्यादा मतदाताओं के बाहर कर दिए जाने की जानकारी देश के सामने आ चुकी थी। याद रहे कि जिस बांग्लादेश को भारत में घुसपैठ का मुख्य स्रोत माना जाता है, उसकी आबादी कुल पौने अठारह करोड़ है। बहरहाल, एसआईआर के घुसपैठियों के खतरे के संघ परिवारी प्रचार का जोरदार खंडन ही बन जाने का किस्सा इतने पर ही खत्म नहीं हो जाता है। मीडिया में आयी खोजी रिपोर्टों के अनुसार, ऐसे छरू राज्यों में जहां एसआईआर की प्रक्रिया पूरी हो गयी है, 9 करोड़ 96 लाख मतदाताओं में से, कुल 1600 विदेशी पाए गए हैं। इनमें बांग्लादेशी तो छोड़ ही दें, मुसलमानों की भी संख्या उल्लेखनीय नहीं है।

अशांति की जड़ में नौकरियां, भोजन और भविष्य–किधर जा रहा भारत?

मृगांक एम. भौमिक

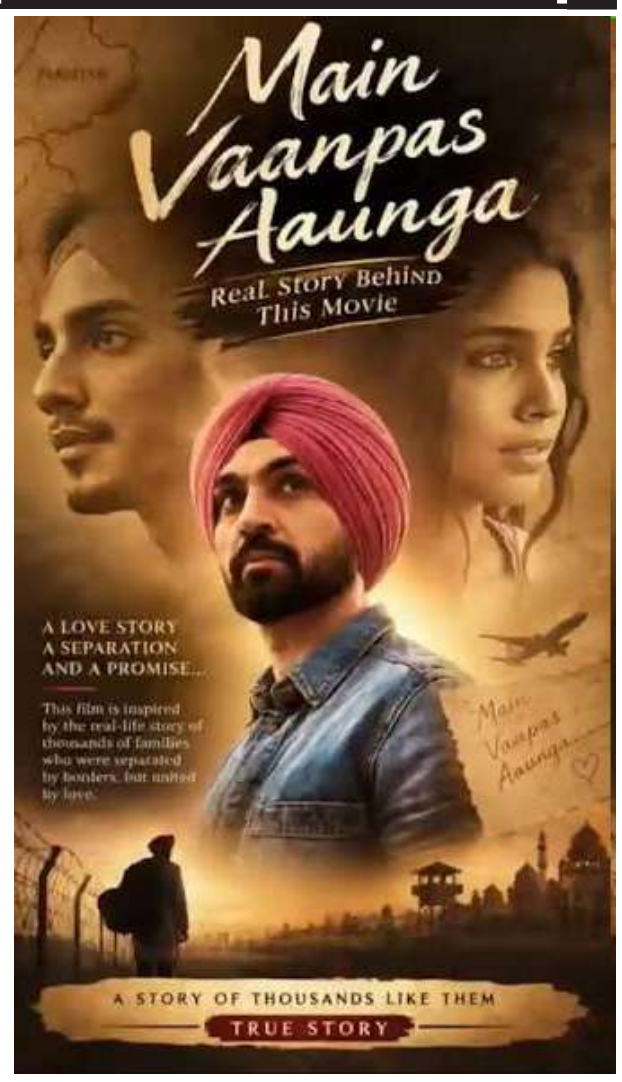
मौजूदा राजनीतिक अशांति, अगर इसे ऐसा कहा जाए, तो यह युवाओं और मध्यम व निम्न–मध्यम वर्ग के एक बड़े हिस्से के मन में भविष्य को लेकर छाई निराशा को दर्शाती है। भारत में बड़ी संख्या में लोगों, खासकर युवाओं को यह एहसास हो गया है कि उनके कौशल का अर्थव्यवस्था में कोई खास उपयोग नहीं है। दुनिया पहले ही ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दिशा में आगे बढ़ चुकी है, जहां वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन ही मुख्य आधार है। जीडीपी के उत्पादन में मानवीय श्रम धीरे–धीरे अप्रासंगिक होता जा रहा है, क्योंकि यहां का अधिकांश श्रम बल या तो अकुशल है या फिर अर्ध–कुशल। इतनी विशाल आबादी को 2050 तक ले जाना और साथ ही राजनीतिक व सामाजिक एकजुटता बनाए रखना, एक बेहद कठिन चुनौती है। आने वाला समय उतना अच्छा नहीं है, जितना कि सोशल मीडिया रीलों और सरकारी विज्ञापनों में दिखाया जाता है। भारत के सामने एक वास्तविक चुनौती खड़ी हो रही है, चाहे सत्ता में कोई भी पार्टी हो या रहे। पिछले दो दशकों में भारत सहित पूरी दुनिया में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बढ़ा है और संपत्ति भी पैदा हुई है, लेकिन अफसोस कि इसका लाभ बड़े पैमाने पर लोगों तक नहीं पहुंचा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यापार और वाणिज्य में मूल्य सृजन के लिए अब इंसानों की जरूरत नहीं रह गई है। आप इसे राजनीतिक रूप से श्बिना नौकरियों वाला विकासश कहकर आलोचना कर सकते हैं, लेकिन असल में यह मानवीय श्रम पर तकनीक का इतना हावी हो जाना है, जिसने यह खालीपन पैदा कर दिया है। सरकार के पास अब कल्याणकारी योजनाओं के जरिए इतनी बड़ी आबादी का पेट भरने के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा है वरना, एक बड़ा मानवीय संकट खड़ा हो सकता था। अब तक, भारत के लिए यह एक सुनहरा दौर था, जब जीडीपी को बेहतर बनाने के लिए तकनीक के साथ–साथ बड़ी संख्या में श्रम शक्ति (लेबर फोर्स) की जरूरत थी– चाहे वह सॉफ्टवेयर, वित्तीय सेवाएं हों या औद्योगिक उत्पादन। अब नई तकनीक खुद को इस तरह विकसित कर रही है कि वह आर्थिक गतिविधियों में इंसानी भूमिका (जो एक अहम हिस्सा थी) की जगह ले सके, जिससे संतुलन बिगड़ गया है। ऐसे में, ऐसा लगता है कि इंसानी श्रम की–चाहे वह उच्च–मूल्य वाला हो या निम्न–मूल्य वाला–अब कोई खास मांग नहीं रह गई है। हम यह समझने की कोशिश कर सकते हैं कि चीन ने अपनी बढ़ती आबादी के बीच नौकरियों के सृजन और नीतियों को कैसे संभाला। चीन ने पिछले 50 वर्षों में अपने मानव संसाधनों का उपयोग करके और कृषि से लेकर उद्योग तक सही आर्थिक नीतियां लागू करके भारी संपत्ति का निर्माण किया। उनकी सबसे बड़ी सफलता कृषि क्षेत्र के मजदूरों को कम उत्पादकता वाले कामों से निकालकर, अधिक मूल्य पैदा करने वाले औद्योगिक कार्यों में लगाना रहा। लेकिन ऐसा किसी एक नीतिगत फैसले से नहीं हुआ। बल्कि यह चीन द्वारा लिए गए कई रणनीतिक नीतिगत फैसलों का नतीजा था। चीन ने 1978 में कृषि उदारीकरण के साथ अपने बड़े नीतिगत बदलाव की शुरुआत की। इसके बाद, देश ने एक क्रम में ग्रामीण उद्योगों का विकास किया, फिर निर्यात–आधारित विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) की ओर कदम बढ़ाया, निर्यात क्षेत्र (एक्सपोर्ट जोन) बनाए, और अंत में विदेशी निवेश को आकर्षित किया। कृषि क्षेत्र से मुक्त होने वाली श्रम शक्ति को उसी गति से अधिक उत्पादकता वाले, निर्यात–आधारित औद्योगिक कार्यों में खपा लिया गया। भारी पूंजी वाले उद्योगों के बजाय, चीन ने शुरुआत में उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जहां उसकी विशाल श्रम शक्ति एक बड़ा फायदा साबित हो सकती थी। एफडीआई और निर्यात अपने साथ तकनीक, प्रबंधन और चीन के अपने उपभोक्ताओं से कहीं बड़ा बाजार लेकर आए। सस्ते लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा और सप्लायर नेटवर्क ने लागत को कम कर दिया, जिससे कारखाने की हर एक नौकरी के साथ–साथ उससे जुड़े अन्य क्षेत्रों में भी कई और नौकरियां पैदा हुईं। अनुकूल आयु संरचना की बदौलत उच्च निवेश और बचत संभव हो पाई, जिसने इस विस्तार के लिए जरूरी फंड मुहैया कराया। श्हुकोउश प्रणाली ने शहरों और नियोक्ताओं के लिए प्रवासियों से जुड़े सामाजिक खर्चों को कम रखा, जिससे इनपुट लागत और भी कम हो गई (हालांकि, प्रवासियों को इसके लिए एक मानवीय कीमत चुकानी पड़ी)। अगर आप इसकी तुलना भारत के सफर से करें, तो आप पाएंगे कि उसी दौर में भारत को आकार देने वाले नीतिगत फैसलों में बहुत बड़ा अंतर था। भारत ने कभी भी भूमि सुधारों और उच्च उत्पादकता वाले कृषि उदारीकरण को पूरी तरह से नहीं अपनाया, और आज भी स्थिति वैसी ही है। भारत में बड़ा नीतिगत बदलाव 1991 में उदारीकरण के साथ ही आया। इस नीति ने औद्योगिक लाइसेंसिंग को खत्म कर दिया और वैश्विक बाजार के लिए व्यापार के दरवाजे खोल दिए। लेकिन जमीन, श्रम और बिजली के क्षेत्रों में सुधार करना मुश्किल बना रहा। इसी सख्ती के कारण, चीन के विपरीत, भारत की औद्योगिक कहानी उस बड़े पैमाने पर आगे नहीं बढ़ पाई। आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां उसे एक ऐसी विकास रणनीति की जरूरत है, जो उसकी 140 करोड़ से अधिक की आबादी को उत्पादक रोजगार दे सके। इसे इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती कहा जा सकता है। इस चुनौती की जड़ यह है कि आज भी 45–46प्रतिशत आबादी कृषि कार्यों में लगी हुई है। यह क्षेत्र भारत की जीडीपी में 16–18प्रतिशत का योगदान देता है, जो कि वैश्विक जीडीपी के हिसाब से केवल 0.5–0.6प्रतिशत है। अब समय आ गया है कि कृषि में प्रति व्यक्ति उत्पादकता बढ़ाने के लिए हाई–टेक कृषि उत्पादन और खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रोसेसिंग) को मजबूती दी जाए। एआई, रोबोटिक्स और ऑटोमेशन के इस दौर में, देश को अपने श्रम संसाधनों को बचाने के लिए कपड़ों, जूतों और इलेक्ट्रॉनिक असेंबली जैसे श्रम–प्रधान विनिर्माण क्षेत्रों में कदम रखना चाहिए। निजी कंपनियां अपने प्रोमोटरों के लिए तो काफी संपत्ति बना सकती हैं, लेकिन वे बड़े पैमाने पर श्रम शक्ति को रोजगार देने में सक्षम नहीं होंगी। आने वाले 20 वर्षों में मानवीय संकट से बचने के लिए, सरकार को अपने जन–कल्याण मॉडल पर फिर से विचार करना होगा और श्रम–प्रधान विनिर्माण क्षेत्रों में निवेश करना होगा। भारत की स्थिति अलग है, इसलिए इसका समाधान भी चीन से अलग होगा। पिछले 50 वर्षों में, चीन में लोगों की संख्या की तुलना में रोजगार के अवसर तेजी से बढ़े हैं, जबकि भारत में अच्छी नौकरियों की तुलना में लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अब से, यह केवल रोजगार सृजन की योजना नहीं होगी, बल्कि एक ऐसा स्वदेशी विकास मॉडल होगा जो भारत की आर्थिक वृद्धि को गति देगा और यहां के लोगों के लिए रोजगार व भोजन उपलब्ध कराएगा।



राहा कपूर की रामायण से एक्टिंग में डेब्यू? रणबीर कपूर ने बताया– बेटी ने शूट किया उनके साथ एक सीन

> रणबीर ने बताया कि वे और उनकी पत्नी आलिया भट्ट अक्सर राहा को रामायण की कहानियां सुनाते हैं। सेट पर बार-बार आने जाने की वजह से राहा को इस पौराणिक दुनिया को बहुत करीब से देखने का मौका मिला।

रणबीर कपूर के लिए आने वाली फिल्म रामायण सिर्फ एक प्रोफेशनल प्रोजेक्ट नहीं है, बल्कि यह उनके परिवार के लिए भी एक बहुत ही खास और भावनात्मक अनुभव बन चुका है। फिल्म की शूटिंग के दौरान उनकी बेटी राहा कपूर का इस महाकाव्य से एक गहरा नाता जुड़ गया है। फिल्म के रिलीज होने से पहले रणबीर ने एक इंटरव्यू में राहा से जुड़े कई दिलचस्प खुलासे किए हैं। रणबीर ने बताया कि वे और उनकी पत्नी आलिया भट्ट अक्सर राहा को रामायण की कहानियां सुनाते हैं। सेट पर बार–बार आने जाने की वजह से राहा को इस पौराणिक दुनिया को बहुत करीब से देखने का मौका मिला। अभिनेता ने खुलासा किया कि राहा ने फिल्म में उनके, साई पल्लवी (सीता) और रवि दुबे (लक्ष्मण) के साथ एक शॉट की शूटिंग भी की है। रणबीर ने खुशी जताते हुए कहा कि यह पहली ऐसी कहानी होगी जिसे वह बड़े पर्दे पर देखेगी, और वह सच में इस खूबसूरत सफर का हिस्सा रही है। उनका मानना है कि पिता बनने के ठीक बाद यह फिल्म उनके जीवन में आई, जिससे एक बेहतर इंसान बनने की उनकी इच्छा और इस कहानी के साथ उनका जुड़ाव और भी ज्यादा गहरा हो गया है। रणबीर ने कहा, राहा को खुद भी रामायण की कहानी में बहुत दिलचस्पी है। मैं और आलिया (भट्ट) उसे अक्सर कहानियां सुनाते हैं। वह कई बार सेट पर आई है। उसने साई और लक्ष्मण (रवि दुबे) के साथ भी एक शॉट दिया है। इसलिए, वह सच में इस सफर का हिस्सा रही है। मुझे बहुत खुशी है कि यह पहली ऐसी कहानी होगी जिसे वह स्क्रीन पर देखेगी, क्योंकि मैं चाहता हूं कि वह इसे जरूर देखे। रणबीर ने इस बात पर भी चर्चा की कि कैसे यह फिल्म उनके जीवन में ठीक उसी समय आई, जब वे पिता बने थे। उन्होंने कहा कि पिता बनने के बाद उनमें एक बेहतर इंसान बनने की नई चाहत जगी, जिससे इस कहानी के साथ उनका जुड़ाव और भी अर्थपूर्ण हो गया। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह एक बेहतर इंसान बनने की मेरी अपनी इच्छा थीय यह मेरे जीवन में बिल्कुल सही समय पर आई, ठीक उसी वक्त जब मैं पिता बना था। रणबीर ने अपनी को–स्टार साई पल्लवी के साथ एक प्यारा निजी पल भी साझा किया। जब उनसे पूछा गया कि उनकी जिंदगी का श्दीयाश या रोशनी कौन है, तो उन्होंने जवाब देने में जरा भी देर नहीं लगाई। उन्होंने तुरंत अपनी बेटी राहा का नाम लिया। त्योहारी सीजन के बारे में बात करते हुए रणबीर ने कहा, मेरे लिए, यकीनन मेरी बेटी। यह उसकी चौथी दिवाली है... दिवाली से दो दिन पहले, यानी 6 नवंबर को उसका जन्मदिन है। इसलिए, मैं उम्मीद करता हूँ कि उसे ढेर सारा आशीर्वाद मिले और उसके आस–पास अच्छी ऊर्जा और सकारात्मकता बनी रहे। राहा का जन्मदिन दिवाली के इतने करीब होने की वजह से, कपूर परिवार के लिए यह त्योहारी सीजन और भी खास हो जाता है। 6 नवंबर को वह चार साल की हो जाएगी, जो उसके पिता की फिल्म के पहले भाग के सिनेमाघरों में रिलीज होने के ठीक एक दिन बाद है। नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित और नमित मल्होत्रा घ्द्वारा निर्मित, रामायण को भारतीय महाकाव्य के दो–भाग वाले सिनेमाई रूपांतरण के रूप में प्लान किया गया है। इस फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम के रूप में, साई पल्लवी सीता के रूप में, यश रावण के रूप में, रवि दुबे लक्ष्मण के रूप में और सनी देओल हनुमान के रूप में नजर आएंगे। कलाकारों की इस टोली में अरुण गोविल, लारा दत्ता, शीबा चड्ढा और अन्य जाने–माने कलाकार भी शामिल हैं।



अमित साध की फिल्म 'प्रताप' के गाने 'मैं वापस आऊंगा' में दिखी प्यार और बिछड़ने की भावुक कहानी

अमित साध और ईशा देओल की आगामी फिल्म 'प्रताप' का नया गाना 'मैं वापस आऊंगा' रिलीज कर दिया गया है। यह गाना प्यार, यादों और अपनों से दूर होने के एहसास को बयां करता है। इसके बोलों में इंतजार के साथ दोबारा लौटने का भरोसा भी नजर आता है। गाने को शाश्वत सिंह और प्रतिज्ञा ने अपनी आवाज दी है, जबकि इसका संगीत अफजलाली ने तैयार किया है। 'मैं वापस आऊंगा' उन भावनाओं को सामने लाता है, जो किसी अपने से दूर होने पर मन में उठती हैं। गाने में प्यार के साथ यादों और इंतजार का भाव जुड़ा हुआ है। इसके जरिए यह दिखाने की कोशिश की गई है कि दूरियां होने के बावजूद रिश्तों में उम्मीद और साथ निभाने का वादा कायम रह सकता है। गाने को लेकर अमित साध ने कहा कि इसकी भावना ऐसी है, जिससे हर कोई किसी न किसी रूप में जुड़ाव महसूस कर सकता है। वहीं, शाश्वत सिंह ने भी इस गाने का हिस्सा बनने को लेकर अपनी बात रखी। उनके मुताबिक, गाने की भावनाओं को आवाज देना उनके लिए खास अनुभव रहा। फिल्म की कहानी एनकाउंटर स्पेशलिस्ट प्रताप रानाडे के इर्द–गिर्द घूमती है, जिसकी जिंदगी में ऐसा मोड़ आता है कि उसे जेल के पीछे जाना पड़ता है। फिल्म का निर्देशन और लेखन सचिन सराफ ने किया है। इसमें अमित साध और ईशा देओल के अलावा सीमा बिस्वास, तिग्मांशु धूलिया और मिलिंद गुणाजी भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। प्रदीप रंगवानी के प्रोडक्शन में न्ट थ्पसउे के बैनर तले बनी यह फिल्म 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

जैकी श्रॉफ और शरद केलकर की फिल्म में जमीन बनेगी खौफ की वजह, इस दिन होगी रिलीज

हिंदी सिनेमा में हॉरर की दुनिया में एक नया और रहस्यमयी कॉन्सेप्ट लेकर फिल्म काली खेती आ रही है। जैकी श्रॉफ और शरद केलकर स्टारर इस फिल्म का टीजर रिलीज हो गया है, जिसमें एक ऐसे गांव की झलक दिखाई गई है, जहां खेतों और जमीन से जुड़ा कोई अनजाना डर लोगों की जिंदगी पर हावी है। लोककथाओं, रहस्य और खौफ के मेल से बनी यह कहानी दर्शकों के मन में कई सवाल छोड़ती है। फिल्म 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। काली खेती के टीजर में एक ऐसे गांव की झलक दिखाई गई है, जहां लोगों की जिंदगी और रोजी–रोटी का आधार बनी खेती ही उनके डर की वजह बन गई है। गांव किसी रहस्यमयी शक्ति के प्रभाव में नजर आता है और यहां की जमीन से जुड़ा कोई गहरा राज कहानी का अहम हिस्सा है। मेकर्स ने अभी तक इस अनजानी ताकत की असलियत उजागर नहीं की है। टीजर में दिखाई गई झलकियां कई सवाल खड़े करती हैं और कहानी को लेकर उत्सुकता बढ़ाती हैं। फिल्म की खास बात यह है कि इसमें ग्रामीण भारत के परिचित माहौल को रहस्य और डर के साथ जोड़ा गया है। टीजर में जैकी श्रॉफ अपने खास अंदाज में नजर आते हैं, जबकि शरद केलकर की मौजूदगी कहानी के रहस्यमय माहौल को और गहरा करती है। दोनों कलाकारों के किरदारों के बारे में फिलहाल ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन उनकी झलक से कहानी में उनकी अहम भूमिका का संकेत मिलता है। फिल्म की दुनिया को खास बनाने वाली बात इसका ग्रामीण परिवेश है। यहां खेत और जमीन सिर्फ खेती करने की जगह नहीं, बल्कि एक ऐसे रहस्य का हिस्सा हैं, जिसका असर पूरे गांव पर दिखाई देता है। काली खेती पारंपरिक हॉरर कहानियों से अलग रास्ता अपनाती नजर आती है। भारतीय गांवों में पीढ़ियों से चली आ रही मान्यताओं, लोककथाओं और जमीन से जुड़े विश्वासों को फिल्म में डर का आधार बनाया गया है। कहानी में यह सवाल भी अहम है कि गांव के लोगों के सामने मौजूद खतरा किसी अलौकिक शक्ति का नतीजा है या इसके पीछे कोई ऐसा रहस्य है, जिसे अब तक समझा नहीं जा सका। हालांकि, टीजर के आधार पर फिल्म की पूरी कहानी का अंदाजा लगाना अभी मुश्किल है, लेकिन इसका कॉन्सेप्ट दर्शकों के सामने एक अलग तरह की हॉरर दुनिया पेश करता है। काली खेती का लेखन और निर्देशन हरीस इम्तियाज खान ने किया है, जबकि सना खान इसकी निर्माता हैं। ब्लैककैनवस स्टूडियो के बैनर तले बनी इस फिल्म में जैकी श्रॉफ और शरद केलकर के अलावा नेहा सरगम, वीरेंद्र सक्सेना और शाजी चौधरी भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। फिल्म 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। अब देखना होगा कि जमीन और खेती के इर्द–गिर्द बुना गया यह रहस्य बड़े पर्दे पर दर्शकों को कितना डराने और बांधे रखने में कामयाब होता है।





शादी के 4 साल बाद अलग हुए कनिका कपूर और गौतम हथिरमानी, गायिका ने दी आधिकारिक जानकारी

बॉलीवुड की मशहूर प्लेबैक सिंगर कनिका कपूर एक बार फिर अपनी निजी जिंदगी को लेकर सुर्खियों में हैं। श्बेबी डॉलश और श्चिट्टियां कलाइयांश जैसे सुपरहिट गानों से दर्शकों के दिलों पर राज करने वाली 48 वर्षीय गायिका कनिका कपूर ने बिजनेसमैन पति गौतम हथिरमानी से अलग होने की आधिकारिक पुष्टि कर दी है। वर्ष 2022 में लंदन में बेहद धूमधाम से शादी के बंधन में बंधने वाले इस जोड़े का रिश्ता चार साल बाद खत्म होने जा रहा है। कनिका ने सोशल मीडिया के जरिए इस कठिन फैसले की जानकारी दी और अपने प्रशंसकों तथा मीडिया से अपनी निजता (प्राइवेसी) का सम्मान करने की भावुक अपील की। इसके साथ ही उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल से शादी की सभी पुरानी तस्वीरें भी हटा दी हैं। एक इंटरव्यू में कनिका ने साफ किया कि उनके अलग होने के पीछे कोई तीसरा व्यक्ति नहीं है। उन्होंने इन दावों को भी खारिज कर दिया कि उनकी शादी इसलिए टूटी क्योंकि वह लागोस (नाइजीरिया) नहीं जाना चाहती थीं, जहां गौतम अपने काम के सिलसिले में रहते हैं। अपने आधिकारिक बयान में कनिका ने कहा, ष्काफी सोच–विचार के बाद, मैंने और मेरे पति ने अलग होने का फैसला किया है। हमने साथ जो समय बिताया, उसके लिए मैं आभारी हूं और उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूं। अब जब हम अपनी जिंदगी में आगे बढ़ रहे हैं, तो मैं उम्मीद करती हूं कि आप हमारी प्राइवेसी का सम्मान करेंगे। मुंबई मिरर के अनुसार, गौतम हथिरमानी के दोस्तों ने बताया कि इस अलगाव से वे बहुत दुखी हैं। उन्होंने कहा कि गौतम को शुरू से ही पता था कि कनिका एक स्वतंत्र विचारों वाली इंसान हैं और अपने परफॉरमेंस के सिलसिले में अक्सर दुनिया भर में घूमती रहती हैं। कभी–कभी तो वह एक ही हफ्ते में सेंट ट्रोपेज़, लंदन और मुंबई के बीच सफर करती थीं। रिपोर्ट के मुताबिक, एक तरफ एक सफल गायिका थीं जिनका शेड्यूल काफी व्यस्त रहता था, और दूसरी तरफ एक ऐसे बिजनेसमैन थे जो काम की वजह से लागोस नहीं छोड़ सकते थे।



आयुष्मान खुराना ने बताया फिल्मों के चुनाव का मंत्र, बोले- 'कुछ नया और अलग करने की कोशिश जारी रहेगी'

बॉलीवुड में अपनी अलग पहचान बनाने वाले आयुष्मान खुराना उन अभिनेताओं में शामिल हैं, जिन्होंने अपने करियर में कई ऐसे किरदार निभाए हैं, जो आम फिल्मों की कहानियों से अलग रहे हैं। कभी सामाजिक मुद्दों को कॉमेडी के अंदाज में पेश किया तो कभी थ्रिलर और रोमांस के जरिए दर्शकों को नया अनुभव दिया। 'विक्की डोनर', 'शुभ मंगल सावध ाान', 'अंधाधुन' और 'ड्रीम गर्ल' जैसी फिल्मों से उन्होंने अपनी इस खास पहचान को मजबूत किया है। अब 'उड़ता तीर', 'ये प्रेम मोल लिया' और 'मुपापा' के साथ अभिनेता एक बार फिर अलग–अलग तरह की कहानियों के जरिए दर्शकों के सामने आने की तैयारी में हैं। आयुष्मान का कहना है कि वह हमेशा ऐसे विषयों और किरदारों की तलाश में रहते हैं, जिन्हें पर्दे पर कम एक्सप्लोर किया गया हो। अपने फिल्मी चुनाव के बारे में उन्होंने कहा, "मैंने हमेशा उस रास्ते पर चलने में विश्वास किया है, जिस पर कम लोग चलते हैं। मेरी फिल्मों का चुनाव इसी सोच को दिखाता है। मैं ऐसी कहानियों का हिस्सा बनना चाहता हूं, जो कंटेंट के मामले में आगे हों और दर्शकों को कुछ नया दें। दर्शकों का भरोसा ही मुझे प्रयोग करने, जोखिम उठाने और अलग–अलग जॉनर में खुद को आजमाने का हौसला देता है। आयुष्मान की फिल्मों पर नजर डालें तो उन्होंने खुद को किसी एक जॉनर तक सीमित नहीं रखा है। उनकी फिल्मोग्राफी में सोशल कॉमेडी, डार्क थ्रिलर, रोमांटिक ड्रामा और देशभक्ति से जुड़ी कॉमेडी तक कई तरह की कहानियां शामिल हैं। ऐसे दौर में जब फ्रेंचाइजी फिल्मों और बड़े स्तर पर बनाई जा रही कहानियों का चलन है, अभिनेता ने अलग विषयों वाली फिल्मों को चुनकर अपनी राह बनाई है। उनके मुताबिक, किसी फिल्म में नया नजरिया और मनोरंजन दोनों हों, तो दर्शक उसे अपनाने के लिए तैयार रहते हैं। अपनी फिल्मों को मिल रहे दर्शकों के प्यार पर बात करते हुए आयुष्मान ने कहा, "एक अभिनेता के तौर पर मैं ऐसी फिल्मों का हिस्सा बनना चाहता हूं, जो लोगों को कुछ नया दें और उनका मनोरंजन भी करें। 'उड़ता तीर' को मिल रहा प्यार मेरे लिए बेहद खास है। इससे मेरा भरोसा और मजबूत हुआ है कि दर्शक नई कहानियों और अलग अंदाज को स्वीकार करते हैं, अगर वे उनसे जुड़ पाते हैं और उनका मनोरंजन होता है। उन्होंने आगे कहा कि वह उन निर्देशकों, लेखकों और पूरी टीम के आभारी हैं, जिन्होंने अलग तरह की कहानियों के लिए उन पर भरोसा जताया।



सीढ़ियां चढ़ते समय आपके भी घुटनों में होता है दर्द ? बुढ़ापा नहीं गलत आदतें है इसकी वजह

अगर हर बार सीढ़ियां चढ़ते समय आपके घुटनों में दर्द होता है, तो शायद अब समय आ गया है कि आप अपने शरीर की बात सुनें। यह दर्द यूं ही अचानक नहीं होता, बल्कि आपके जोड़ आपको कुछ जरूरी बता रहे होते हैं। अपोलो अस्पताल के एक अनुभवी ऑर्थोपेडिक सर्जन ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में सीढ़ियों से जुड़े घुटनों के दर्द के असली कारण और इससे होने वाले दीर्घकालिक नुकसान से बचाव के तरीके बताए हैं।

घुटनों में दर्द का कारण

सीढ़ियां चढ़ते समय शरीर का वजन सामान्य चलने की तुलना में 3–4 गुना ज़्यादा दबाव घुटनों पर डालता है। अगर घुटनों की कार्टिलेज (हड्डियों के बीच की मुलायम परत) घिस चुकी है या कमजोर है, तो दर्द महसूस होता है।

डॉक्टर के अनुसार मुख्य वजहें

पेटेलोफेमोरल पेन सिंड्रोमः इसे "रनर का नी" भी कहा जाता है। जब घुटने की टोपी (पेटेला) सही जगह पर न घूमे या आसपास की मांसपेशियां कमजोर हों, तो चढ़ते समय दर्द होता है।

ऑस्टियोआर्थराइटिसः उम्र बढ़ने या अधिक वजन से कार्टिलेज घिस जाती है। इससे सीढ़ियां चढ़ना–उतरना, बैठना या उठना दर्दनाक हो जाता है।

क्वाड्रिसेप्स मांसपेशियों की कमजोरीः जांघ के सामने की मांसपेशियां कमजोर होने से घुटनों पर ज़्यादा तनाव पड़ता है। नियमित व्यायाम न करने से यह समस्या बढ़ती है।

पुरानी चोटें या लिगामेंट की समस्याः घुटने में पुराना मोच, चोट या लिगामेंट टियर होने से सीढ़ियां चढ़ते वक्त दर्द होता है।

अत्यधिक वजन या मोटापाः हर कदम पर घुटने को शरीर का पूरा वजन संभालना पड़ता है, जिससे जोड़ जल्दी घिसने लगते हैं।

डॉक्टर की सलाह

फिजियोथेरेपी करें विशेषकर क्वाड्रिसेप्स को मजबूत करने वाले व्यायाम। वजन को नियंत्रित में रखें। आरामदायक जूते पहनें, हाई हील से बचें। सीढ़ियां धीरे–धीरे और सपोर्ट लेकर चढ़ें। घुटने पर गर्म सेंकऔर जरूरत पड़ने पर हल्का दर्दनिवारक मलहम लगाएं। याद रखें घुटनों का दर्द उम्र नहीं, आदतों से बढ़ता है। अगर समय रहते ध्यान दिया जाए तो जोड़ों को लंबे समय तक स्वस्थ रखा जा सकता है।

चॉकलेट वैक्स से मिलेगी निखरी त्वचा, बस जान लें ये 3 आसान टिप्स, नहीं होंगे रैशेज

अपनी खूबसूरती को बरकरार रखने के लिए ज्यादातर महिलाएं कई तरह के ब्यूटी ट्रीटमेंट लेती हैं। वहीं कुछ महिलाएं हाथ और पैर से टैनिंग निकालने के लिए हर महीने वैक्सिंग भी करवाती हैं। वैक्सिंग अलग–अलग तरह की होती है। इनमें से एक वैक्सिंग चॉकलेट वैक्सिंग हैं। ऐसे में अगर आप भी पहली बार चॉकलेट वैक्सिंग कर रही हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको ऐसी तीन बातों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनका आपको चॉकलेट वैक्सिंग करते समय खास ध्यान रखना चाहिए। वरना इससे कुछ महिलाओं को स्किन रिलेटेड समस्या हो सकती है।

पैच टेस्ट जरूर करें

हाथों से टाइमिंग और बालों को हटाने के लिए चॉकलेट वैक्सिंग एक बेस्ट ऑप्शन हो सकता है, लेकिन जब भी आप चॉकलेट वैक्सिंग करवाएं, तो अपनी स्किन पर पैच टेस्ट जरूर करें। पैच टेस्ट के दौरान अगर आपको किसी तरह की कोई स्किन संबंधित परेशानी होती हैं, तो इसका इस्तेमाल करना बंद कर दें और डर्मेटोलॉजिस्ट की राय लें या फिर आप दूसरे वैक्स का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। चॉकलेट वैक्स हर स्किन टाइप पर सूट नहीं हो सकता है, इससे कुछ महिलाओं को रिएक्शन हो सकता है।

सही दिशा का ध्यान रखें

वहीं वैक्स करते समय आप चॉकलेट वैक्स को उस दिशा में लगाएं और जिधर की तरफ से बाल उगते हैं। इस तरीके से अगर आप चॉकलेट वैक्स लगाती हैं, तो इससे बिना किसी स्किन संबंधी परेशानी के आप आसानी से चॉकलेट वैक्स की सहायता से अपने हाथों से हटा सकती हैं। साथ ही यह टैनिंग भी कम कर सकती हैं। लेकिन अगर आप सही दिशा से वैक्स नहीं करती हैं, तो इससे आपके हाथों पर दाने निकल सकते हैं। वहीं कुछ महिलाओं को रैशेज जैसी परेशानियां होती हैं।

स्किन का रखें ध्यान

लास्ट और सबसे जरूरी बात अगर आपका वैक्स सही तरीके से हो जाए, तो उसके बाद आप अपनी स्किन की सही देखभाल करें। वैक्स के फौरन बाद ढीले कपड़े पहनें और डायरेक्ट धूप के संपर्क में आने से बचें। वैक्सिंग के बाद अगर आपको लाल दाने या फिर रैशेज होते हैं, तो आप डर्मेटोलॉजिस्ट की राय लेकर क्रीम लगा सकती हैं। वैक्सिंग के बाद चाहें तो स्किन पर एलोवेरा जेल लगा सकती हैं। इन तीनों टिप्स की सहायता से अगर आप चॉकलेट वैक्स करती हैं, तो आपको वैक्स के दौरान किसी तरह की समस्या नहीं होगी।



सर्दी-जुकाम से राहत के लिए अपनाएं दादी-नानी का नुस्खा, बेसन का शीरा देगा तुरंत आराम।



बदलते मौसम में बच्चों की कमजोर इम्युनिटी अक्सर सर्दी–जुकाम का कारण बनती है। ऐसे में दवाओं की बजाय बेसन का शीरा एक प्रभावी और देसी नुस्खा है, जो इम्युनिटी को बूस्ट कर सर्दी, खांसी और जुकाम से जल्द राहत दिलाता है। यह पौष्टिक पारंपरिक पेय बच्चों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है।

बदलते मौसम में बच्चों को सर्दी–जुकाम की शिकायत हो जाती है। बच्चों की इम्युनिटी कमजोर होने के कारण खांसी–जुकाम की समस्याएं बन जाती है। यदि आपके बच्चे को मौसम के बदलने से सर्दी–जुकाम से परेशान हो गए है, तो इसे दवाओं की जगह आप एक बार बेसन का शीरा बनाकर जरुर पिलएं। यह एक ट्रेडिशनल पंजाबी रेसिपी है, जो मौसम बदलने के बाद बच्चों की इम्यूनिटी को बूस्ट करती है। बीमारी से लड़ने में मदद करती है। बेसन शीरा स्वाद के साथ ही हेल्थ के लिए काफ बढ़िया है। इसके सेवन से सर्दी, खांसी और जुकाम की समस्या जल्द ठीक हो जाती है। आइए आपको बताते हैं कैसे बनाया जाता है टेस्टी और हेल्दी बेसन का शीरा।

बेसन का शीरा बनाने के लिए सामग्री

- 3 बड़े चम्मच बेसन
- 1 बड़ा चम्मच देसी घी
- 2 छोटी चम्मच चीनी/गुड़
- डेढ़ कप दूध
- कुटी हुई इलायची
- 1/4 छोटी चम्मच अजवाइन
- कटे हुए बादाम
- कुटी हुई काली मिर्च
- हरा धनिया
- 1 चुटकी हल्दी

बेसन का शीरा बनाने का तरीका

बेसन का शीरा बनाने के लिए सबसे पहले आप एक कड़ाही लें और गैस पर चढ़ाकर गर्म करें। अब इसमें घी डाले और बेसन को लो फ्लेम पर भूने जब तक इसका रंग हल्का भूरा ना हो जाए। बेसन को अच्छे से भून जाने के बाद इसमें खुशबू आने लगेगी। अब इसमें बेसन इलायची, गुड़, कटे हुए बादाम, कुटी हुई काली मिर्च, अजवाइन और हल्दी डालकर अच्छी तरह सभी चीजों को मिला लीजिए। इसके बाद आप इसमें दूध डालते हुए सभी चीजों को करछी से लगातार चलाते हुए मिलाएं, वरना पेसन में गांठें पड़ जाएगी। बेसन में पड़ी गांठे शीरा का स्वाद बिगड़ सकती हैं। इसके बाद आप दूध को 5 मिनट तक अच्छे से उबालें। इसके बाद बेसन के शीरे में कटा हुआ ताजा हरा धनिया डाल दें। यह लीजिए टेस्टी गर्मागर्म बेसन का शीरा तैयार है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चों को खुली हवा में बाहर ना भेंजे। क्योंकि ऐसा करने से इसका असर कम हो जाता है। बेसन का शीरा पीने के बाद बच्चे सोने दें।



क्या आपके नाखून भी हो जाते हैं नीले? तो इसके पीछे के कारण जानिए

वैसे तो नाखून हमारी उंगलियों की खूबसूरती बढ़ाते हैं, लेकिन इनका सिर्फ इतना ही काम नहीं है। इससे हमारी सेहत के बारे में काफी कुछ पता चल जाता है। हमारे नाखून ज्यादातर सफेद ही होते हैं, लेकिन अगर आप ध्यान दें तो पाएंगे की कई बार नाखूनों का रंग बदला होता है। ये बीमारी का भी संकेत हो सकते हैं। एक्सपर्ट्स की मानें तो पीले नाखून पीलिया की समस्या के कारण हो सकते हैं। वहीं नीले नाखून दिल की बीमारी का संकते हो सकते हैं। इसके अलावा भी कई सारे कारणों से नाखून नीले पड़ सकते हैं। आइए आपको बताते हैं इसके बारे में...

दिल से संबंधित समस्याएं

नाखूनों में नीलेपन का कारण दिल संबंधी रोग भी हो सकते हैं। कॉग्नेटिव हार्ट डिजीज की स्थिति में नाखून और त्वचा के रंग में इस तरीक के बदलाव देखे जा सकते हैं। ईसेनमेंजर सिंड्रोम जैसी दिल संबंधी समस्याओं का जोखिम हो सकता है। दिल की समस्याएं गंभीर दिक्कतों का कारण बन सकती हैं, कुछ मामलों में इनके घातक होने का भी जोखिम होता है, इसी वजह से नाखूनों में हो रहे बदलाव पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

ऑक्सीजन की हो सकती है शरीर में कमी

फेफड़ों से जुड़े रोगों के चलते भी नाखूनों का नीला रंग हो सकता है। इसमें क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) भी शामिल है। सीओपीडी, फेफड़ों की कई प्रकार की समस्याओं का संयुक्त रूप माना जाता है। इसमें शरीर में ऑक्सीजन का सही तरीके से संचार नहीं होता और नाखूनों में नीलापन के साथ, सांस लेने में दिक्कत, निमोनिया, फेफड़ों में इंफेक्शन जैसी समस्या हो सकती है। इससे शरीर के अन्य अंगों पर भी नकारात्मक असर देखा जा सकता है।

लो ब्लड प्रेशर

जिन लोगों का ब्लड प्रेशर लो रहता है, उन्हें भी ये समस्या हो सकती है। इसके अलावा नाखून में सफेद धब्बे कैल्शियम की कमी होने के कारण होते हैं।

खून की कमी

वैसे नाखूनों में हल्का गुलाबी रंग को अच्छे स्वास्थ्य की निशानी होता है, लेकिन वहीं अगर शरीर में खून, मिनरल्स या विटामिन की कमी है तो नाखून नीले पड़ जाते हैं।

क्यों बदलता है नाखूनों का रंग

बता दें कि नाखून कैरेटिन नामक तत्व से बनता है। ऐसे में जब शरीर में इस तत्व की कमी होती है तो नाखून की ऊपर परत पर इसका असर दिखता है। नाखूनों का रंग बदलने लगता है, जिससे शरीर में पनप रहे रोगों का संकेत मिलता है।

डॉक्टर को कब दिखाएं

सांस कम आने पर, सांस लेने में तकलीफ या सांस फूलने या हांफने पर।

छाती में दर्द होने पर।

बहुत ज्यादा पसीना आना।

चक्कर आना या बेहोश होने पर।

अलमारी में बंद ऊनी कपड़ों से आती है बदबू? इन 5 तरीकों से घर बैठे बनाएं खुशबूदार



धीरे–धीरे सर्दियां दस्तक दे रही है। अब मौसम में भी काफी बदलाव आ रहा है। हल्की से ठंड पड़ने लगी है। ऐसे में लोग बंद रखे हुए ऊनी कपड़ों को निकाल रहे हैं। सर्दियों को ऊनी कपड़े सिर्फ साल के दो या 3 महीने पहने जाते हैं। बाकी पूरे साल तो ये कपड़े आलमारी, बक्से, बेडबॉक्स में ही बंद पड़े रहते हैं। जिस वजह से इनमें बदबू भर जाती है। अक्सर होता है कि ऊनी कपड़े जब बक्से और वॉर्डरोब से निकाले जाते हैं तो अंजीब से बदबू आने लगती है। कभी ऊनी कपड़े साफ ना होने की वजह से पसीना और बैक्टीरिया के साथ सीलन की बदबू भर जाती है। ऐसे में बदबूदार ऊनी कपड़ों, जैकेट, शॉल को पहनना मुश्किल हो जाता है। आइए आपको इन 7 घरेलू तरीकों से ऊनी स्वेटर, जैकेट से आने वाली बदबू को दूर करें।

धूप सबसे बेहतर है

अगर आप ऊनी कपड़ो को बदबू को दूर करना चाहते हैं, तो धूप सबसे सरल और सस्ता उपाय है। वुलन क्लॉथ को धूप में डालने से कपड़ों से दुर्गंध चली जाएगी। कपड़ों पर धूप लगने से नमी, बैक्टीरिया को खत्म कर देंगे। जिससे बदबू भी निकल जाएगी। लेकिन ध्यान रखें कि जब भी तेज धूप हो तो कपड़ों को उल्टा करके रखें। वरना कपड़ो का रंग उड़ सकता है।

बेकिंग सोडा का यूज करें

यदि आप वुलन कपड़े आलमारी में रखने से इनमें सीलन और फफूंद लग गई है, तो कपड़ों से आ रही इस तरह की बदबू को दूर भगाने के लिए बेकिंग सोडा को पानी में घोलकर कपड़ो को डालकर निकाल दें। यदि आपके पास कपड़ों को धोने का टाइम नहीं है, तो बेकिंग सोडा को कपड़ो पर छिड़कर कुछ देर छोड़ दें और बाद में सूखे कपड़े से साफ कर दें।

वुलन्स पर करें नेचुरल फ्रेशनर का स्प्रे

अगर ऊनी कपड़ों से स्मेल आ रही है, तो इसे दूर करने के लिए नेचुरल फ्रेशनर का स्प्रे बना लें। एक स्प्रे बोतल में पानी भर लें, उसमें एक नींबू का रस और दो से तीन चम्मच गुलाबजल के डाल दें। मिक्स करके इसे ऊनी कपड़ों पर छिड़काव कर दें। इस तरह के स्प्रे से वुलन जैकेट, स्वेटर सबसे नेचुरल भीनी सी स्मेल आएगी और आपके कपड़े भी फ्रेश महकेंगे।

कपूर का करें यूज

वुलन कपड़ों में किसी तरह की महक ना आए इसलिए जब भी इन्हें स्टोर करें तो कपूर लौंग की छोटी पोटली बांधकर वुलन्स के साथ रख दें। इसकी महक कपड़ों में फ्रेशनेस बनाकर रखेगी।

एसेंशियल ऑयल का स्प्रे

अगर आप भी वुलन स्वेटर, जैकेट, शॉल जैसे कपड़ों से बदबू हटाने के लिए एसेंशियल ऑयल को आलमारी में रखें।

संक्षिप्त



कोलकाता में 65 और दिल्ली में 64 रुपये प्रति किलो पहुंची चीनी, महानगरों में खुदरा भाव में उछाल

त्योहारों के दौरान आपूर्ति की कमी दूर करने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद खुदरा एवं थोक बाजारों में चीनी की कीमतें पिछले एक महीने में चार रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक बढ़ गई हैं। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, चीनी का औसत दैनिक खुदरा और थोक मूल्य क्रमशः 59.50 रुपये प्रति किलोग्राम और 55.40 रुपये प्रति किलोग्राम रहा। सालाना आधार पर कीमतें 12–13 रुपये प्रति किलोग्राम बढ़ी हैं। एक साल पहले खुदरा बाजार में चीनी का भाव 46.50 रुपये प्रति किलोग्राम और थोक बाजार में 43.23 रुपये प्रति किलोग्राम था। महानगरों में तीन नवंबर को कोलकाता में खुदरा चीनी का भाव सबसे अधिक 65 रुपये प्रति किलोग्राम रहा, जबकि एक साल पहले यह 50 रुपये था। इसके बाद दिल्ली में कीमत 64 रुपये प्रति किलोग्राम (एक साल पहले 46 रुपये) और मुंबई में 61 रुपये प्रति किलोग्राम (एक साल पहले 45 रुपये) रही। कीमतें ऊंची रहने की मुख्य वजह 2025–26 में चीनी का उत्पादन पहले के अनुमान से कम रहना है। त्योहारी मांग, फसल को नुकसान, वैश्विक स्तर पर आपूर्ति में कमी और जमाखोरी ने भी कीमतों पर दबाव बढ़ाया है। सरकार ने भंडार सीमा तय करने, आयात, करीबी निगरानी और गन्ने की पेराई पहले शुरू कराने जैसे कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय सहकारी चीनी कारखाना महासंघ लिमिटेड (एनएफसीएसएफ) ने सोमवार को कहा था कि भारत ने 2026–27 के चीनी सत्र (अक्टूबर–सितंबर) के पहले महीने में 8.45 लाख टन चीनी का उत्पादन किया। पेराई सत्र आठ अक्टूबर को शुरू हुआ था और 30 अक्टूबर तक 152 मिलों ने चीनी का उत्पादन किया था। इससे जारी त्योहारों के दौरान घरेलू आपूर्ति बढ़ी है।

भारत में बैटरी कलपुर्जे बनाना आयात से 60 प्रतिशत तक महंगा : एनईटीआरए रिपोर्ट

नयी दिल्ली। भारत में बैटरी कलपुर्जे बनाने वाली कंपनियों की उत्पादन लागत समान आयातित उत्पादों की तुलना में 60 प्रतिशत तक अधिक है। उद्योग संगठन 'नेट जीरो एनर्जी ट्रांजिशन अलायंस (एनईटीआरए) और अन्य संस्थाओं की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। इस सप्ताह की शुरुआत में जारी रिपोर्ट के अनुसार, भारत में कैथोड और एनोड सामग्री, इलेक्ट्रोलाइट, सेपरेटर तथा तांबे की पन्नी बनाने वाली कंपनियों की लागत आयातित उत्पादों की तुलना में 18 से 61 प्रतिशत तक अधिक है। एनईटीआरए ने एआरसीआई, सीएसआईआर–एनसीएल, आईआईटी मद्रास और डेलॉयट के सहयोग से यह रिपोर्ट तैयार की है। भारी उद्योग मंत्रालय ने इसे जारी किया है। इसमें 20 से अधिक भारतीय कंपनियों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है, जब सरकार देश में बैटरी के कलपुर्जे बनाने वाली कंपनियों को समर्थन देने के लिए एक विशेष योजना लाने पर विचार कर रही है। 'एक्सेलरेटिंग इंडियाज एसीसी कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में वैश्विक बैटरी कलपुर्जों की आपूर्ति में चीन के लगभग पूर्ण वर्चस्व की ओर ध्यान दिलाया गया है। नेट जीरो एनर्जी ट्रांजिशन के सह–संस्थापक एवं कार्यकारी निदेशक देबी प्रसाद दास ने कहा कि रिपोर्ट में लागत से जुड़े आंकड़े उन भारतीय कंपनियों से लिए गए हैं, जो इन संयंत्रों को स्थापित कर रही हैं या लगाने की योजना बना रही हैं। उन्होंने कहा कि अलग–अलग कलपुर्जों के मामले में लागत का अंतर होने के कारण भी अलग–अलग हैं। एनईटीआरए के संस्थापक एवं अध्यक्ष राहुल वालावलकर ने कहा कि नए विनिर्माताओं को शुरुआती पांच से छह साल तक उत्पादन में अधिक सामग्री की बर्बादी का सामना करना पड़ता है। रिपोर्ट के मुताबिक, बैटरी सेल के कुल विनिर्माण खर्च में कलपुर्जों की हिस्सेदारी करीब 76 प्रतिशत होती है। भारत में बैटरी की मांग 2025 के करीब 33 गीगावाट घंटे (जीडब्ल्यूएच) से बढ़कर 2032 में 236 जीडब्ल्यूएच और 2037 तक करीब 600 जीडब्ल्यूएच होने का अनुमान है।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 17 पैसे चढ़ा रुपया, 94.58 के स्तर पर बंद

मुंबई। रुपये में बुधवार को लगातार दूसरे कारोबारी सत्र में तेजी रही और यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 17 पैसे मजबूत होकर 94.58 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर रहा। कच्चे तेल की कीमतों में नरमी, अमेरिकी डॉलर में कमजोरी और विदेशी पूंजी प्रवाह से रुपये को समर्थन मिला। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि घरेलू शेयर बाजार में तेजी और अमेरिका के मध्यावधि चुनाव के नतीजों से वैश्विक निवेशकों की धारणा में सुधार ने भी रुपये को मजबूती दी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 94.61 प्रति डॉलर पर खुला। कारोबार के दौरान यह 94.50 के उच्चतम स्तर तक पहुंचा और 94.87 के निचले स्तर तक आया। अंत में रुपया पिछले बंद भाव के मुकाबले 17 पैसे की बढ़त के साथ 94.58 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर रहा। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.75 पर बंद हुआ था, जो नौ पैसे की बढ़त है। जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि अमेरिका के मध्यावधि चुनाव के नतीजों से वैश्विक धारणा में सुधार हुआ है। इससे व्यापार और शुल्क नीतियों को लेकर अधिक संतुलित रुख अपनाए जाने की उम्मीद बढ़ी है, जिससे उभरते बाजारों में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) का निवेश बढ़ सकता है। इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.53 प्रतिशत फिसलकर 101.18 पर रहा। डेमोक्रेटिक पार्टी के पक्ष में मध्यावधि चुनाव के नतीजे आने की उम्मीदों के बीच अमेरिकी सरकारी बॉन्ड पर प्रतिफल में भी गिरावट आई। अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट कच्चे तेल का भाव वायदा कारोबार में 0.73 प्रतिशत की गिरावट के साथ 102.84 डॉलर प्रति बैरल रहा। हालांकि, भू–राजनीतिक अनिश्चितताएं बनी हुई हैं। घरेलू शेयर बाजार में सेंसेक्स 383.55 अंक यानी 0.50 प्रतिशत चढ़कर 77,301.40 अंक पर जबकि निफ्टी 149.75 अंक यानी 0.63 प्रतिशत की बढ़त के साथ 23,960.60 अंक पर रहा।

किंग कोहली के कमाल से न्यूजीलैंड बेहाल, पहले वनडे में भारत की धमाकेदार जीत, 5 विकेट से हारा न्यूजीलैंड

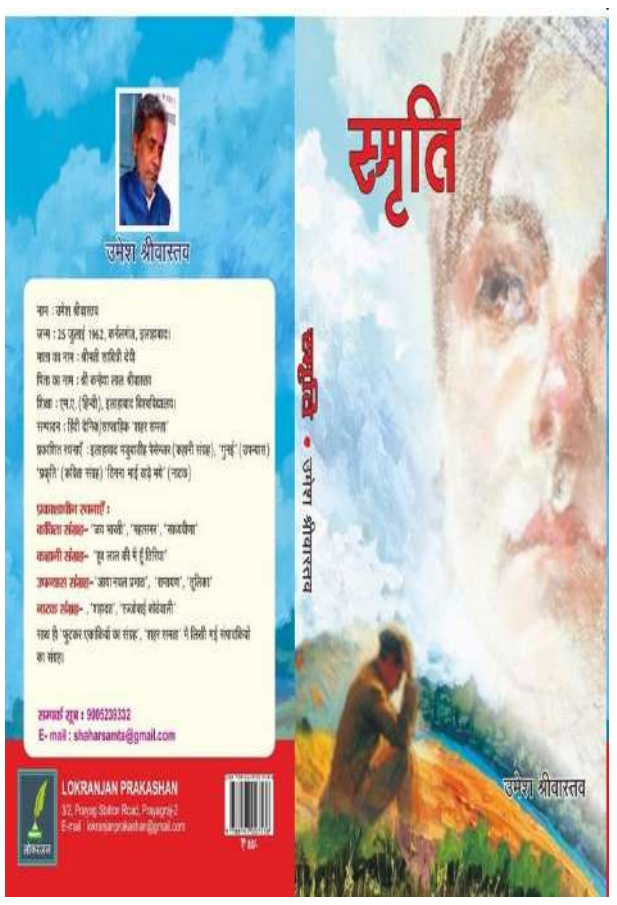


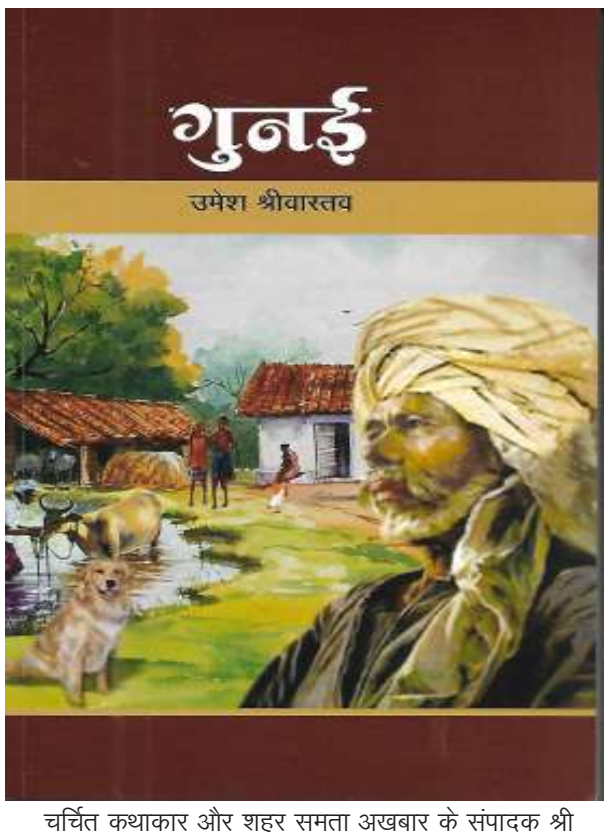
ऑकलैंड में पहले वनडे मैच में भारत ने न्यूजीलैंड को पांच विकेट से हराकर 1–0 की बढ़त बना ली। बारिश से प्रभावित इस मुकाबले में न्यूजीलैंड 185 रनों पर सिमट गई और भारत को 32 ओवरों में 143 रनों का संशोधित लक्ष्य मिला। विराट कोहली की 74 रनों की पारी और शुभमन गिल के साथ शतकीय साझेदारी से भारत जीता।

ऑकलैंड के ईडन पार्क में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे मैच में विराट कोहली की शानदार 74 रनों की पारी और कप्तान शुभमन गिल के साथ उनकी शतकीय साझेदारी की बदौलत भारत ने आसानी से जीत दर्ज की। बारिश से प्रभावित इस मैच में मिली जीत के साथ ही भारत ने पांच मैचों की सीरीज में 1–0 की बढ़त बना ली है। न्यूजीलैंड की टीम 185 रनों पर ऑलआउट हो गई थी, जिसके बाद भारत को जीत के लिए 186 रनों का लक्ष्य मिला। रोहित शर्मा जल्दी ही बिना खाता खोले आउट हो गए। भारत की पारी के दौरान दो बार बारिश ने खेल में बाधा डाली, जिसके कारण क्स्ै नियम के तहत लक्ष्य को संशोधित करना पड़ा और भारत को 32 ओवरों में 143 रन बनाने का नया लक्ष्य मिला। कोहली ने मुश्किल हालात में मोर्चा संभाला और गिल के साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 114 रन जोड़े। 19वें ओवर में कप्तान गिल 37 रन बनाकर आउट हो गए। यह साझेदारी निर्णायक साबित हुई और भारत ने 5 विकेट शेष रहते ही संशोधित लक्ष्य हासिल कर लिया। इससे पहले, बल्लेबाजी करने का फैसला करने के बाद न्यूजीलैंड की टीम 40.2 ओवर में 185 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत के अनुभवहीन तेज गेंदबाजी आक्रमण ने ऐसा प्रदर्शन किया जिससे उनके अनुभव की कमी का पता ही नहीं चला। जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा के उपलब्ध न होने पर, पंजाब की जोड़ी अर्शदीप सिंह (4/70) और गुरनूर बराड़ (3/44) ने अंशुल कंबोज (2/22) के साथ मिलकर जिम्मेदारी संभाली। पावरप्ले के दौरान अर्शदीप ने दो विकेट लिए, जिससे न्यूजीलैंड की टीम पहले दस ओवरों में 2 विकेट पर 45 रन तक ही पहुंच सकी। इसके बाद, चंडीगढ़ के 6 फुट 5 इंच लंबे तेज गेंदबाज गुरनूर ने अपनी गति और अतिरिक्त उछाल से मेजबान टीम को परेशान किया; उन्होंने शानदार रिफ्लेक्स दिखाते हुए टॉम लैथम का कैच खुद ही पकड़ा। वहीं, कंबोज ने अपने दस ओवर के स्पेल में 46 डॉट गेंदें फेंकीं, जिससे बीच के ओवरों में न्यूजीलैंड की रन गति पूरी तरह थम गई। टीम सीफर्ट ने सबसे ज्यादा 38 रन बनाए, जबकि ग्लेन फिलिप्स और डेरिल मिशेल ने अच्छी शुरुआत तो की, लेकिन वे इसे बड़ी पारी में नहीं बदल सके। केएल राहुल की बेहतरीन विकेटकीपिंग और रोहित शर्मा की सतर्कता की बदौलत मिशेल रन आउट हो गए। इसके बाद, कोहली ने दूसरी स्लिप पर एक शानदार कैच लपककर नाथन स्मिथ को पवेलियन भेजा। ब्लेयर टिकनर ने अंत में कुछ आक्रामक शॉट खेलेकृजिसमें अर्शदीप के आखिरी ओवर में लगाए गए तीन छक्के शामिल थेकृजिससे न्यूजीलैंड का स्कोर 180 के पार पहुंच गया। हालांकि, ईडन पार्क की अच्छी पिच को देखते हुए यह स्कोर कम ही लग रहा था। दूसरा वनडे शनिवार को वेलिंगटन में खेला जाएगा।

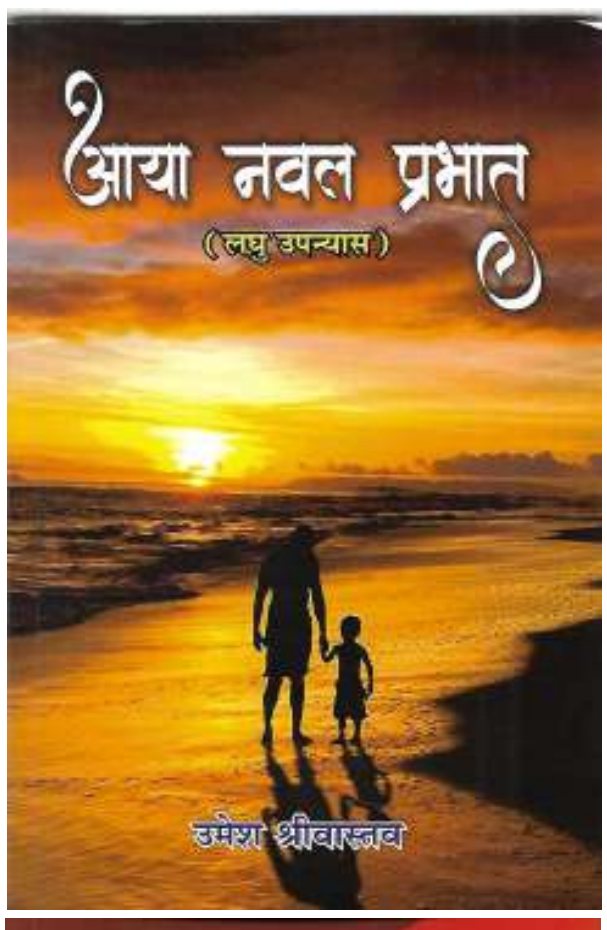
मोहम्मद आमिर ने IPL में खेलने की अफवाहों को किया खारिज, APL में कराया पंजीकरण

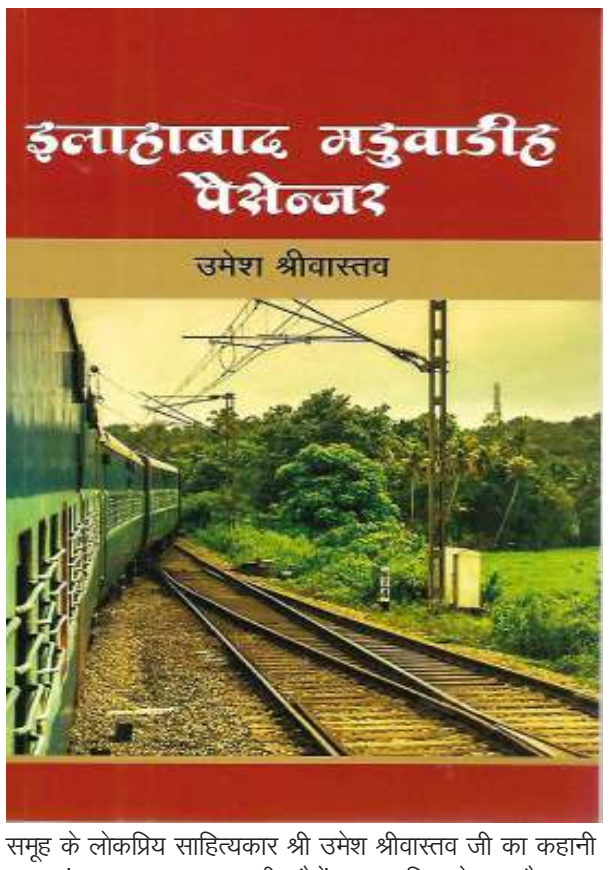
पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर के आईपीएल में खेलने की अटकलों पर अब विराम लग गया है। ब्रिटिश नागरिकता हासिल करने के बाद अफगानिस्तान प्रीमियर लीग के लिए अपना नाम दर्ज कराने वाले आमिर को लेकर चर्चा थी कि वह आईपीएल में भी खेल सकते हैं। हालांकि, खुद आमिर ने इन खबरों को गलत बताते हुए साफ कर दिया है कि उनका आईपीएल में खेलने या इसके लिए पंजीकरण कराने का कोई इरादा नहीं है। मोहम्मद आमिर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट के जरिए इन खबरों का खंडन किया। उन्होंने लिखा कि वह आईपीएल को लेकर चल रही खबरों पर स्थिति साफ करना चाहते हैं। उनके मुताबिक, आईपीएल में खेलने से जुड़ी खबरें सही नहीं हैं। आमिर के इस बयान के बाद उन अटकलों पर विराम लग गया है, जिनमें उन्हें ब्रिटिश नागरिक के रूप में आईपीएल में उतरने की संभावना जताई जा रही थी। दरअसल, इस साल की शुरुआत में ब्रिटिश नागरिकता मिलने के बाद आमिर के आईपीएल में खेलने की चर्चा शुरू हुई थी। उन्होंने हाल ही में अफगानिस्तान प्रीमियर लीग के लिए भी अपना नाम दर्ज कराया है। इसके बाद माना जा रहा था कि वह ब्रिटिश खिलाड़ी के रूप में आईपीएल में जगह बनाने की कोशिश कर सकते हैं। इससे पहले पाकिस्तान के पूर्व ऑलराउंडर अजहर महमूद भी इसी तरह ब्रिटिश नागरिकता के आधार पर आईपीएल में खेल चुके हैं। आमिर ने इस साल इंग्लैंड की घरेलू टी–20 प्रतियोगिता द हंड्रेड में स्थानीय खिलाड़ी के रूप में हिस्सा लिया था। शुरुआत में विदेशी खिलाड़ी के तौर पर उनका नाम खिलाड़ियों की सूची में शामिल था, लेकिन बाद में ब्रिटिश नागरिकता मिलने के कारण उनकी स्थिति बदल गई। आमिर ने अपनी पत्नी नरजिस खान के जरिए ब्रिटिश नागरिकता हासिल की है। स्थानीय खिलाड़ी के रूप में खेलने की शर्तों के बारे में आमिर ने पहले बताया था कि काउंटी चौंपियनशिप और द हंड्रेड जैसी प्रतियोगिताओं में स्थानीय खिलाड़ी के तौर पर खेलने के लिए एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करना होता है। इसके तहत खिलाड़ी किसी दूसरे देश के लिए स्थानीय खिलाड़ी के रूप में नहीं खेल सकता। उन्होंने यह भी कहा था कि पाकिस्तान के लिए खेलने का उनका पुराना अध्याय अब समाप्त हो चुका है। गौरतलब है कि पाकिस्तानी खिलाड़ियों को 2008 में पहले सत्र के बाद से आईपीएल में खेलने का मौका नहीं मिला है। ऐसे में ब्रिटिश नागरिकता हासिल करने के बाद अजहर महमूद का आईपीएल में खेलना एक खास मामला रहा था। उन्होंने 2012 से 2015 के बीच इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था। वह पंजाब किंग्स की पुरानी टीम किंग्स इलेवन पंजाब के लिए खेले और बाद में कोलकाता नाइट राइडर्स का भी हिस्सा बने। बता दें कि मोहम्मद आमिर ने 2024 टी–20 विश्व कप के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था।



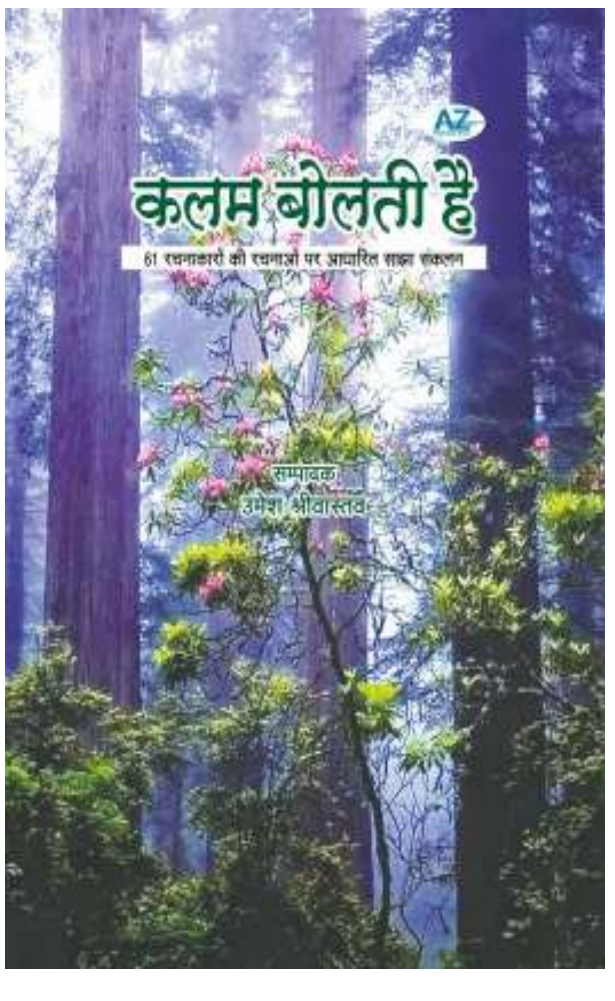


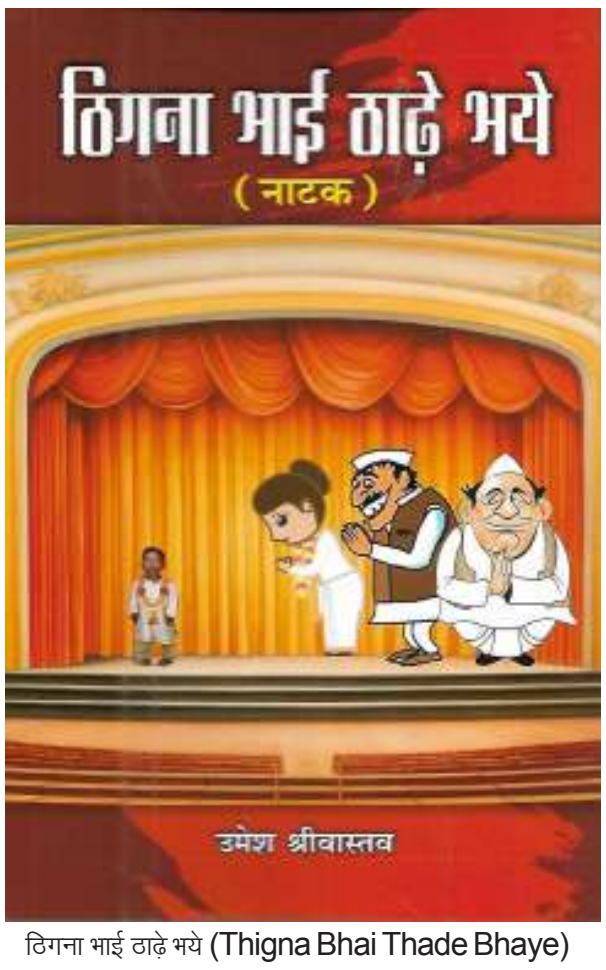
चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित





समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।





ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

रियाद हवाई अड्डे में घायल एक और भारतीय ने तोड़ा दम, कुल मृतकों की संख्या 14 हुई

दुबई। सऊदी अरब स्थित भारतीय दूतावास ने बुधवार को कहा कि रियाद के किंग खालिद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 10 अक्टूबर को हुए हमले में गंभीर रूप से घायल एक और भारतीय नागरिक की मौत हो गई है। दूतावास ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''अत्यंत दुख के साथ हम यह जानकारी दे रहे हैं कि 10 अक्टूबर को रियाद हवाई अड्डे पर हुए हमले में गंभीर रूप से घायल एक और भारतीय नागरिक का आईसीयू में निधन हो गया है।'' इसने कहा, ''हम शुरू से ही उनके परिवार के संपर्क में रहे और अब भी उनके साथ हैं। हम परिवार और मित्रों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।'' दूतावास ने कहा कि वह शव को भारत पहुंचाने, या परिवार की इच्छा के अनुसार रियाद में ही अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने में हरसंभव सहायता प्रदान करेगा। हवाई अड्डे पर 10 अक्टूबर को हुए हमले में एक भारतीय नागरिक की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हुए थे। इस हमले में जान गंवाने वाले पहले भारतीय नागरिक की पहचान मोहम्मद यूसुफ अली के रूप में हुई थी, जिनका 12 अक्टूबर को रियाद में अंतिम संस्कार किया गया था। भारतीय दूतावास ने 23 अक्टूबर को अद्यतन जानकारी में कहा था कि दो घायल भारतीय नागरिक अब भी गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती हैं, जबकि दो अन्य लोगों का अस्पताल के सामान्य वार्ड में इलाज किया जा रहा है। तब तक सात घायल भारतीयों को अस्पताल से छुट्टी मिल चुकी थी। सऊदी अरब ने 10 अक्टूबर के हमले के लिए यमन के ईरान–समर्थित हुती विद्रोहियों को जिम्मेदार ठहराया, हालांकि इस समूह ने आधिकारिक तौर पर इसकी जिम्मेदारी नहीं ली। नागर विमानन प्राधिकरण, सऊदी अरब ने शुरुआत में बताया था कि इस हमले में 12 लोगों की मौत हुई और 309 लोग घायल हुए। हमले में घायल एक भारतीय नागरिक की मौत के बाद मृतकों की संख्या बढ़कर 13 हो गई थी, और अब एक अन्य भारतीय नागरिक की मौत से यह संख्या 14 हो गई है।

69 मौतों के बाद परिवहन मंत्री ऑस्कर पुएंते ने दिया इस्तीफा

मैड्रिड। मैड्रिड के दक्षिण में हाई–स्पीड ट्रेन के दुर्घटनाग्रस्त होने से 69 लोगों की मौत की घटना के छह दिन बाद स्पेन के परिवहन मंत्री ने मंगलवार को पद से इस्तीफा देने की घोषणा की। परिवहन मंत्री ऑस्कर पुएंते ने सांसदों के समक्ष कई घंटे तक हुई चर्चा के अंत में यह घोषणा की। स्पेन के व्यापक हाई–स्पीड रेल नेटवर्क पर इस वर्ष हुई यह दूसरी भीषण दुर्घटना थी। पुएंते ने सांसदों से कहा, ''स्पेन जैसे देश का परिवहन मंत्री एक वर्ष के भीतर दो रेल हादसों के बाद अपने पद पर बना नहीं रह सकता। यह राजनीतिक मर्यादा, सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता और पीड़ितों के प्रति संवेदना का प्रश्न है।'' यह हादसा 28 अक्टूबर को उस समय हुआ, जब मैड्रिड–सेविले रेलमार्ग पर सुरक्षा व्यवस्था से जुड़ा मुख्य संचार तंत्र ठप हो गया। इसके कारण मैड्रिड स्थित केंद्रीय नियंत्रण कक्ष ने रेल परिचालन की कमान संभाली और पटरी पर पहले से एक रेलगाड़ी मौजूद होने के बावजूद दूसरी रेलगाड़ी को आगे बढ़ने की अनुमति दे दी। परिणामस्वरूप दूसरी तेज रफ्तार रेलगाड़ी पहले से मौजूद रेलगाड़ी से जा टकराई। मैड्रिड–सेविले रेलमार्ग पर इस वर्ष यह दूसरा बड़ा हादसा है। इससे पहले जनवरी में इसी मार्ग पर दक्षिण की ओर जा रही एक रेलगाड़ी पटरी से उतरकर विपरीत दिशा से आ रही दूसरी रेलगाड़ी से टकरा गई थी। उस दुर्घटना में 46 लोगों की मौत हुई थी। उस हादसे की जांच अभी जारी है।

अब्दुल अब दरी नहीं बिछाएंगे...अमेरिका में अल सैयद की जीत पर ओवैसी ने यूपी के मुस्लमानों को दिया बड़ा मैसज

अमेरिका के मिशिगन सीनेट चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी के अब्दुलरहमान मोहम्मद अल–सैयद ने जीत दर्ज कर इतिहास रच दिया है। वह अमेरिकी उच्च सदन (सीनेट) के सदस्य बनने वाले पहले मुस्लिम हैं। इस ऐतिहासिक नतीजे का असर भारत के सियासी गलियारों में भी दिखा, जहाँ ।प्डप्ड अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने इस मौके पर उत्तर प्रदेश के मुस्लिम समाज को एक बड़ा राजनीतिक संदेश दिया। ओवैसी ने अमेरिकी राजनीति के इस बदलाव की मिसाल देते हुए यूपी के अल्पसंख्यकों को अपनी संगठित राजनीतिक ताकत और हिस्सेदारी बढ़ाने की नसीहत दी। मिशिगन में एक अब्दुल जीत गया है; अब उत्तर प्रदेश के अब्दुल को अपनी राजनीतिक पहचान मजबूत करनी होगी। संघियों ने अब्दुल शब्द को एक ताने के रूप में इस्तेमाल करने की बहुत कोशिश की है। अब समय आ गया है कि हम दिखा दें कि अब्दुल अल्लाह के सिवा किसी के सामने नहीं झुकता। अब हम और नमाज़ की चटाई नहीं बिछाएंगे। अल–सैयद ने मिशिगन यूनिवर्सिटी और कोलंबिया यूनिवर्सिटी से मेडिकल की पढ़ाई की और रोड्स स्कॉलर के तौर पर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। सैयद ने सारा जकाकू से शादी की है, जिनके माता–पिता भारतीय मूल के हैं। सैयद खुद को पूंजीवादी (कैपिटलिस्ट) मानते हैं। उनका चुनाव अभियान मुख्य रूप से जीवन–यापन की लागत और अन्य मुद्दों पर केंद्रित था, और वे पिछले साल न्यूयॉर्क के मेयर ज़ोहरान ममदानी के चुनाव अभियान से प्रभावित थे। उन्होंने सभी के लिए मेडिकेयर इज़राइल को दी जाने वाली सैन्य सहायता को खत्म करने और चुनाव वित्तपोषण (कैंपेन फाइनेंस) में सुधार जैसे मुद्दों पर प्रचार किया।

अमेरिका में जीती फिलिस्तीनी हिजाब वाली महिला, मुंह दिखाने लायक नहीं रहे ट्रंप



अमेरिका में मिड टर्म इलेक्शन से पहले ट्रंप खूब चिल्लाए थे। फ्रांस के खूब उदाहरण दिए थे। इटली हो, फ्रांस हो, अल्बेनिया हो, यूरोप के तमाम वो देश जिन देशों ने ओपन बॉर्डर पॉलिसी अपनाई थी, जहां इलीगल इमीग्रेंट्स आए थे और जिस तरीके से पिछले 21 सितंबर से लगातार फ्रांस जल रहा है। मतलब डेढ़ महीने के आसपास । उन लोगों का तमाम तरीके से हर लहजे में हर तरीके से उदाहरण दिया कि अगर ये मुस्लिम इमीग्रेंट्स आते हैं किसी विदेश में तो ये आपका वहां तबाही लेकर आते हैं। मेरी जो पॉलिसी है जिस तरीके से मैं इललीगल इमीग्रेंट्स को देश से वापस भेज रहा हूं उनकी तारीफ होनी चाहिए और उनके अगर आप अमेरिका में भी इस तरीके से आने देंगे तो यहां भी आपको वही सब देखने को मिलेगा जो यूरोप में देखने को मिला, फ्रांस इटली में देखने को मिला। लेकिन इस मिड टर्म इलेक्शन में यह सारा चुनाव प्रचार ट्रंप के लिए कोई काम नहीं आया। वहां एक फिलिस्तीन मूल की महिला जो हिजाब पहनकर चुनाव लड़ रही थी। मतलब ट्रंप ने ये कहा था कि आप इस तरीके से चुनाव को लेकर चलिए। आप चुनाव में इस तरीके से वोट करिएगा। यह मानकर कि हर सीट पर ट्रंप चुनाव लड़ रहे हैं। तो ऐसे में क्या यह मान लिया जाए कि अब कवास ने आपका डोनाल्ड ट्रंप को चुनावी मैदान में हरा दिया है। अमेरिका की मदद से अमेरिका की फंडिंग से अमेरिका के हथियारों से अमेरिका की टेक्नोलॉजी से अमेरिका के साथ से उस अमेरिका में फिलिस्तीन मूल की एक महिला सांसद चुनकर आती है विधायिका का हिस्सा हो जाती है जबकि वो इससे पहले अमेरिका के द्वारा इजराइल को फंडिंग दी जाती थी गाज़ा के लिए उसका विरोध कर चुकी हैं। उसके बावजूद लोगों ने अगर वोट किया है तो मतलब अमेरिका में यह मुद्दा नहीं है इललीगल इमीग्रेंट्स का या फिर मुस्लिम्स का। जोहरान ममदानी भी इससे पहले चुनाव जीत चुके हैं।

कौन है ये एबर कवास

ये न्यूयॉर्क स्टेट सीनेट डिस्ट्रिक्ट 12 की सीट पर इन्होंने जीत हासिल की है। जीत के बाद कवास ने सोशल मीडिया पर लिखा कि हमने इतिहास रच दिया फर्स्ट पैलेस्तीनियन इेड इन न्यूयॉर्क स्टेट। ब्रूकलिन की रहने वाली 34 वर्षीय फिलिस्तीनी अमेरिकी अब कवास ने 74.3: वोट हासिल किए। मतलब रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार हानखोट को बड़े अंतर से नहीं बल्कि बहुत बड़े अंतर से उन्होंने हराने का काम किया है। कवास ने न्यूयॉर्क के मेयर जोहरा ममदानी और सेनेटर बरनी सेंडर्स के समर्थन के प्राइमरी चुनाव में जीत हासिल की थी और राज्य की दावेदारी पक्की की थी।

अमेरिका में ये प्राइमरी चुनाव क्या होता है?

जिस तरीके से अमेरिका में सिर्फ मुख्य तौर पर दो पार्टी चुनाव लड़ती है। एक डेमोक्रेट एक रिपब्लिकन। अब इसे इस तरीके से ले लीजिए जैसे वाराणसी सीट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुनाव लड़ते हैं और बीजेपी में ही कुछ और उम्मीदवार भी ऐसे हैं जो वाराणसी सीट से चुनाव लड़ना चाहती है। तो पार्टी सबको चुनाव लड़ने के लिए कह देती है कि सब लड़िए। उसके लिए प्राइमरी इलेक्शन होता है। प्राइमरी इलेक्शन में लोग वोट करते हैं या फिर लोगों की पसंद लोगों से पूछा जाता है आप किसे ज्यादा पसंद कर रहे हैं? तो उसे ही चुनाव लड़ाया जाता है। यहां हो सकता है कि जिस सीट से इन्होंने चुनाव लड़ा जब प्राइमरी इलेक्शन करवाना पड़ा तो मतलब और लोग भी यहां डेमोक्रेटिक पार्टी से चुनाव लड़ने के लिए मैदान में उतरे होंगे और उन सबके ऊपर मतलब जोहरान ममदानी का भी इन्हें समर्थन मिला तब जाकर इन्हें टिकट मिला और ये चुनाव में जीती हैं।

अगर मैं मैदान में होता, तो भारी बहुमत से जीतते – रिपब्लिकन पार्टी को झटका लगने पर डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा बयान



अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में संपन्न हुए 2026 के अमेरिकी मिडटर्म (मध्य–अवधि) चुनावों में रिपब्लिकन पार्टी को मिले झटके के बाद एक तीखी प्रतिक्रिया दी है। राष्ट्रपति ट्रंप ने बुधवार को दावा किया कि इन चुनावों में पार्टी की हार का मुख्य कारण यह था कि उनका अपना नाम बैलेट (मतपत्र) पर नहीं था। ट्रंप का मानना है कि यदि वे खुद इस चुनाव मैदान में होते, तो रिपब्लिकन पार्टी को ऐतिहासिक और भारी बहुमत से जीत हासिल होती। यह बयान ऐसे समय में आया है जब देश के विभिन्न हिस्सों में डेमोक्रेटिक पार्टी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अमेरिकी सीनेट में महत्वपूर्ण बढ़त हासिल कर ली है। ट्रंप ने अपने ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में कहा, ष्मैं चुनाव मैदान में नहीं था, और अगर होता, तो हम भारी बहुमत से जीतते! इस बात पर ध्यान देने के लिए धन्यवाद। द न्यूयॉर्क टाइम्स के साथ एक इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा कि वे मिडटर्म चुनावों के नतीजों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। इन चुनावों में डेमोक्रेट्स ने काफी बढ़त हासिल की है और सीनेट तथा गवर्नर पद की कई अहम सीटों पर जीत दर्ज की है। जैसे–जैसे नतीजे सामने आ रहे थे, ट्रंप ने कहा, ष्मैं इन नतीजों को पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार हूं। ट्रंप ने द न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि वे डेमोक्रेट्स के साथ मिलकर काम करने को तैयार हैं। राष्ट्रपति ने कहा, ष्हम डेमोक्रेट्स के साथ काम करेंगे, और हम उनके साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हैं। हम शायद कोई रास्ता निकाल लेंगे। इससे कुछ दिन पहले ही उन्होंने दावा किया था कि वे अगले दो सालों तक अपनी श्वीटोश शक्तियों का इस्तेमाल करके प्रशासन चलाएंगे। 2026 के मिडटर्म चुनावों में डेमोक्रेट्स ने अमेरिकी सीनेट पर फिर से नियंत्रण हासिल कर लिया है। यह रिपब्लिकन पार्टी के लिए एक बड़ा झटका है और इससे राष्ट्रपति ट्रंप के एजेंडे के खिलाफ कांग्रेस (संसद) में विरोध और तेज होने के आसार हैं। चुनाव नतीजों में बढ़ती कीमतों, ईरान में चल रहे युद्ध और सरकारी भ्रष्टाचार को लेकर मतदाताओं की नाराजगी साफ दिखी। डेमोक्रेट्स ने हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स (प्रतिनिधि सभा) में भी सात सीटें जीती हैं, हालांकि इस सदन पर किसका नियंत्रण होगा, यह अभी कहना जल्दबाजी होगी। सीनेट पर डेमोक्रेट्स का नियंत्रण ट्रंप के कार्यकाल के आखिरी दो सालों को पूरी तरह बदल देगा। इससे उनके एजेंडे को आगे बढ़ाने की क्षमता सीमित हो सकती है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट में रूढ़िवादी (कंजर्वेटिव) झुकाव को बनाए रखने की उनकी उम्मीदें भी शामिल हैं। ट्रम्प ने वादा किया है कि वे डेमोक्रेट्स के एजेंडे को रोकने के लिए अपनी वीटो शक्ति का इस्तेमाल करेंगे, जिससे वाशिंगटन में गतिरोध पैदा होने की संभावना है। इन चुनावों से वाशिंगटन में सत्ता का समीकरण पूरी तरह बदल जाएगा। मंगलवार के चुनाव से पहले डेमोक्रेट्स कुछ हद तक आशान्वित थे, लेकिन उन्होंने देखा कि रिपब्लिकन पार्टी ने प्रचार के आखिरी दौर में उन राज्यों और जिलों में करोड़ों डॉलर झोंक दिए, जहाँ ट्रम्प ने दो साल पहले आसानी से जीत हासिल की थी। साथ ही, उन्होंने ट्रम्प को कुछ ऐसे राज्यों में भी प्रचार करते देखा, जो रिपब्लिकन पार्टी के सबसे मजबूत गढ़ माने जाते हैं।

भारतीय–अमेरिकी पिया डंडिया की फ्लोरिडा से ऐतिहासिक जीतः रिपब्लिकन केसी असकर को हराकर US हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में दर्ज की उपस्थिति

अमेरिका में हाल ही में संपन्न हुए 2026 के मध्यावधि चुनावों के नतीजों ने भारतीय–अमेरिकी समुदाय के लिए एक और नया इतिहास रच दिया है। भारतीय–अमेरिकी डेमोक्रेट पिया डंडिया ने फ्लोरिडा के 22वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट से ै हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स का चुनाव जीतकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। बेहद कड़े और कांटे के मुकाबले में पिया डंडिया ने अपने प्रतिद्वंद्वी रिपब्लिकन उम्मीदवार केसी असकर को मात दी।मंगलवार को घोषित



आधिकारिक परिणामों के अनुसार, हाई स्कूल की पूर्व प्रिंसिपल रहीं पिया डंडिया को कुल 51.9 प्रतिशत वोट मिले, जबकि रिपब्लिकन उम्मीदवार असकर को 49.1 प्रतिशत वोटों से ही संतोष करना पड़ा। इस जीत के साथ, डंडिया ै कांग्रेस के लिए चुनी जाने वाली सबसे नई भारतीय–अमेरिकी महिला बन गई हैं। गौरतलब है कि डंडिया की जीत भारतीय–अमेरिकी समुदाय के लिए एक अहम पड़ाव है। रिपोर्ट्स के अनुसार, वह फ्लोरिडा से ै हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के लिए चुनी जाने वाली पहली भारतीय–अमेरिकी हैं और ै कांग्रेस में सेवा देने वाली 10वीं भारतीय–अमेरिकी बन गई हैं। डंडिया के माता–पिता भारत से आकर ै में बस गए थे। शुरुआत में, डंडिया ने फ्लोरिडा के 21वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट से रिपब्लिकन ब्रायन मास्ट (जो हाउस फॉरेन अफेयर्स कमिटी के चेयरमैन हैं) को चुनौती देने की योजना बनाई थी।

हालांकि, हाई स्कूल की पूर्व प्रिंसिपल रहीं डंडिया ने बाद में अपना प्रचार फ्लोरिडा के 22वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट में स्थानांतरित कर लिया। यह निर्वाचन क्षेत्रों के पुनर्गठन (रीडिस्ट्रिक्टिंग) के बाद बना एक नया क्षेत्र था, जहां कोई मौजूदा प्रतिनिधि चुनाव नहीं लड़ रहा था। PTI की रिपोर्ट के अनुसार, श्इंडियन अमेरिकन इम्पैक्टश के कार्यकारी निदेशक चिंतन पटेल ने एक बयान में कहा, फ्लोरिडा का 22वां डिस्ट्रिक्ट डेमोक्रेट्स के लिए सबसे कड़े मुकाबले वाले क्षेत्रों में से एक था, और पिया ने इसे श्ब्लूश (डेमोक्रेटिक) बना दिया। उन्होंने आगे कहा, इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट को शुरुआत से ही उनका समर्थन करने पर गर्व है, और हम आज रात उनकी जीत पर उन्हें बधाई देते हैं।

कौन हैं पिया डंडिया?

उनकी प्रचार वेबसाइट के अनुसार, डंडिया पहली पीढ़ी की अमेरिकी हैं। उन्होंने अपने करियर में हाई स्कूल प्रिंसिपल, नीति निर्माता (पॉलिसी लीडर) और टेक्नोलॉजी इनोवेटर के रूप में काम करते हुए समुदायों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया है। फ्लोरिडा के पाम बीच काउंटी में जन्मी और पली–बढ़ीं डंडिया ने अपने करियर की शुरुआत एक शिक्षक के रूप में की थी। इसके बाद उन्होंने न्यूयॉर्क के हार्लेम में एक हाई स्कूल की प्रिंसिपल के तौर पर काम किया।

We Will Kill Trump....मिड टर्म चुनाव में झटका लगते ही ईरान में लगे पोस्टर्स

ईरान की राजधानी तेहरान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप को जान से मारने की धमकी देने वाला एक बिल बोर्ड लगाया गया है जिस पर लिखा है वी विल किल ट्रंप यानी हम ट्रंप को मार डालेंगे। बिलबोर्ड में ट्रंप को एक कैदी की तरह दिखाया गया है। उनके साथ अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस, अमेरिकी दूत स्टीव विटकॉफ और इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की खून से सनी तस्वीरें भी लगाई गई हैं। लेकिन सवाल है कि आखिर ईरान ऐसा करके अमेरिका को क्या मैसेज देना चाहता है?3 नवंबर को तेहरान के मशहूर एंगलाब स्क्वायर में यह विशाल बिल बोर्ड लगाया गया। इस पर ट्रंप का सिर झुका हुआ है और उन्हें जेल की सलाखों के पीछे दिखाया गया है। आसपास लगे दूसरे पोस्टर में ट्रंप, जेडी वेंस, स्टीव विटकॉफ और बेंजामिन नेतन्याहू के चेहरे भी खून से सने नजर आते हैं। उनके पीछे अमेरिका और इजराइल के फटे हुए झंडे भी दिखाई देते हैं। इस दौरान स्क्वायर पर बड़ी संख्या में लोग जुटे। उनके हाथों में लाल झंडे थे। वो देयर विल बी ब्लड यानी खून बहेगा जैसे नारे लगा रहे थे। लोग ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामिनी की मौत का बदला लेने की मांग कर रहे थे। खामनेई की मौत 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजराइल के हमलों के बीच में हुई थी। इसी के बाद दोनों देशों के बीच युद्ध शुरू हुआ था। लेकिन तेहरान में ट्रंप के खिलाफ इस तरह के पोस्टर पहली बार नहीं लगे हैं। युद्ध शुरू होने के बाद से ईरान की राजधानी में कई मौकों पर ऐसे पोस्टर और प्रदर्शन देखने को मिले हैं। कहीं ट्रंप को ताबूत से बाहर निकलते हुए दिखाया गया तो कहीं जेल की कोठरी में बंद दिखाया गया। 2 नवंबर को तेहरान के ताजरीश स्क्वायर में एक आर्ट एग्जिबशन भी लगाई गई। इसमें ट्रंप की खून से सनी तस्वीरें डिस्प्ले की गई। एक तस्वीर में उनके चेहरे पर पैर रखा हुआ भी दिखाया गया। दूसरी तस्वीर में बम से उनका चेहरा ढका हुआ था। ईरान में सार्वजनिक जगहों पर इस तरह के पोस्टर और म्यूरल लंबे समय से राजनीतिक संदेश देने के लिए इस्तेमाल होते रहे हैं। इनका मकसद अपने समर्थकों में जोश पैदा करना और विरोधियों को चुनौती देना होता है। लेकिन इस बार इन पोस्टर्स की टाइमिंग काफी अहम है। क्योंकि एक तरफ तेहरान की सड़कों पर अमेरिका के खिलाफ गुस्सा दिखाया जा रहा है तो दूसरी तरफ दोनों देशों के बीच बातचीत भी चल रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप कई बार कह चुके हैं कि ईरान के साथ समझौता



हो सकता है। 2 नवंबर को भी उन्होंने कहा था कि दोनों देशों के बीच डील पॉसिबल है। इस बातचीत में क़तर मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है। क़तर के जरिए दोनों देशों के बीच प्रस्तावों का आदान–प्रदान हो रहा है। 3 नवंबर को क़तर ने उम्मीद जताई कि दोनों देश किसी अंतरिम समझौते पर पहुंच सकते हैं। क़तर के मुताबिक दोनों पक्ष उसके प्रस्तावों पर विचार कर रहे हैं। लेकिन दोनों देशों के बीच कई मुद्दों पर सहमति नहीं बन पाई है। ईरान चाहता है कि अमेरिका उसके तेल पर लगे प्रतिबंध हटाए और उसके जो पोर्ट हैं वहां जो नौसैनिक की नाकेबंदी है वो खत्म करे और जो भी फ्रीज किया हुआ ईरानी फंड है वो रिलीज करें। इसके बदले में ईरान स्टेट ऑफ होर्मुज को फिर से खोलने और परमाणु कार्यक्रम पर आगे बातचीत के लिए तैयार हो सकता है। ईरान का कहना है कि जब तक उसकी शर्तें पूरी नहीं होती तब तक समझौता आसान नहीं है और इसी बातचीत के बीच अमेरिका ने ईरान पर सैन्यकारी कारवाई भी कर दी है। 2 नवंबर को अमेरिका ने ईरान के केशम आइलैंड पर सीमित हवाई हमले किए। अमेरिकी अधिकारियों ने इसे डिफेंसिव स्ट्राइक यानी रक्षात्मक हमला बताया है। उनका दावा था कि ईरान की तरफ से अमेरिकी विमान और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाए जाने का खतरा था। इसलिए अमेरिकी सेना ने वहां मौजूद मिसाइल ठिकानों को निशाना बनाया। यह हमले ऐसे वक्त में हुए जब ट्रंप ईरान के साथ समझौते की बात कर रहे थे।



प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।